# श्री चन्द्रसखीजी के संकलित पद

**मान तजि चल राधा, यदुनंदा बुलावै री ।**

छोड़ दै छबीली हठ, छोड़ दै हठीली हठ ।
तेरे बिन देखैं कान्हा पान न चबावै री ।
मुरलीधर मुरली में टेरे राधे, तेरौ ही जस गावै री ।
जो तुम मेरे संग न चलौगी राधे, वह तौ आप ही आवै री ।
व्याकुल रहत तोहि बिन देखैं, राधे, क्यों जियरा तरसावै री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, राधे! वह तौ नेह लगावै री ॥

प्रथम संस्करण – २,००० प्रतियाँ

प्रकाशित : २८ फरवरी २०२३

फाल्गुन, शुक्लपक्ष, रंगीली होली, नवमी, २०७९ विक्रमी सम्वत्

**प्राप्ति-स्थान**

**मान मन्दिर, बरसाना**

**फोन – ९९२७३३८६६६**

**एवं**

**श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय**

**अठखम्बा बाजार, वृन्दावन**

**फोन – ९९९७९७७५५१**

**श्री मानमन्दिर सेवा संस्थान**

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

http://www.maanmandir.org

info@maanmandir.org

गुण–गरिमागार, करुणा–पारावार, युगललब्ध–साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा–वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मन्द मति की गति विथकित हो जाती है।

**विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।**
**कहत साधु महिमा सकुचानी ॥**
**सो मो सन कहि जात न कैसे ।**
**साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥**

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड –३क)

पुनरपि

**जो सुख होत गोपालहि गाये ।**
**सो सुख होत न जप तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाये ।**

(सूर–विनयपत्रिका)

अथवा

**रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।**
**तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥**
**जनम–जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥**

(बाबाश्री द्वारा रचित 'बरसाना' से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह 'लेख' मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पाएगा अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में। सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य–विभूति का प्रकर्ष–आर्ष जीवन–चरित्र कहीं लेखन–कथन का विषय है?

**"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"**

(सूर–विनयपत्रिका)

मलिन अन्तस् में सिद्ध सन्तों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक–लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य–दान दिया। माता–पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीय–योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल ('शुक्ल भगवान्' जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को सन्तान–सुख अप्राप्य रहा, सन्तान–प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र–कामना ने व्यथित किया। पुत्र–प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव–जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।"

वही हुआ, गुरु–शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्पकाल में अध्ययन समापन भी हो गया।

## "अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र–कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन–वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े–बड़े संगीत–मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण–परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया; सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास–स्थल 'पूज्यपाद' का भी वनवास–स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार–बार 'पाद–पद्मों' को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है, अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन–मन–नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरन्तर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्वल कान्ति से आलोकित–अलङ्कृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के

प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान 'बरसाना', बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित 'गह्वर–वाटिका' "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गह्वरवन में भी महासदाशया मानिनी का मनभावन मान–स्थान 'श्रीमानमन्दिर' ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। 'मानगढ़' ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह 'बीहड़ स्थान' दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मन्दिर–प्राङ्गण में न आने देता। मन्दिर का आन्तरिक मूल–स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप–पङ्क के चोर को भी एवं रकम–बैंक के चोर को भी। 'ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे' इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोह–दृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरूप जो ठहरे। फिर तो शनैः–शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग–हित–निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमच्चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्णलीला सम्बन्धित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ–साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें – सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज–पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार

रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम–संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य–गान हुआ; नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य–सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत १५ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५५,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह–परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की 'भगवन्नाम' ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े–बड़े कार्य सम्पादित किये इन ब्रज–संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत ७० वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्य जन आपके सान्निध्य–सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव–साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं; इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल–तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस–ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

'आपकी आन्तरिक स्थिति क्या है' यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है। आपका अन्तरंग लीलानन्द, सुगुप्त भावोत्थान, युगल–मिलन का सौख्य इन गहन भाव–दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही सम्भवहै। आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित विलक्षण रचनाएँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है। साधक–साधु–सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन। दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्वल पुञ्ज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केन्द्र बन गयी, सैकड़ों ने छोड़ दिए घर–द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं; ऐसा महिमान्वित–सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस–सिद्ध–सन्तों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पाई। श्रीजी की यह 'गह्वर–वाटिका' जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग 'स्वस्तिवाचन' कर रहा है। आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वन्दन अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

# बालकृष्णाराधक 'श्रीचन्द्रसखीजी'

जिस प्रकार कृष्ण–दिवानी 'मीराबाई' ने गिरधर गोपाल से ही सभी सम्बन्ध जोड़कर साक्षात् गोपिका–प्रेम कलिकाल में प्रकट कर दिया, उसी प्रकार 'चन्द्रसखीजी' की भी बचपन से ही बालकृष्णलाल से सहज प्रीति के कारण जो प्रेमोद्गार पदों के रूप में प्रस्फुटित हुए, उस कृष्णप्रेममयी आराधना द्वारा केवल ब्रज–वसुन्धरा ही नहीं, अखिल विश्व ब्रजरस से अभिसिंचित हुआ है। श्रीमीराजी व चन्द्रसखी जी के पदों की भाषा–भाव शैली मिलती–जुलती है; इसका एक कारण यह भी है कि इनकी भावनाएँ श्रीकृष्ण–प्रेम से ओतप्रोत थीं।

श्रीचन्द्रसखीजी के पदों की गाथा ही उनकी जीवनी है, इनकी पद–रचनाएँ अति साधारण जनसमुदाय में भी सर्वाधिक प्रचलित हैं, आपके पदों की पहिचान में एक विशेष छाप "चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि" प्राप्त होती है। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा 'बालकृष्णलाल की भक्ति–भावपूर्ण सेवा ' का विशेष प्रचार–प्रसार हुआ है; इस आधार पर श्रीचन्द्रसखीजी का जीवनकाल (विक्रमी संवत्) १६ वीं शताब्दी में माना जाता है। श्रीठाकुर रामसिंहजी द्वारा रचित काव्य 'चन्द्रसखी रा भजन' में चन्द्रसखीजी के ही पदों का संकलन किया गया है। रसिक भक्त कविजनों के अनुसार श्रीकृष्णभक्तिरस–क्षेत्र में चन्द्रसखीजी का विशेष योगदान रहा है।

**महत सभा आभरन अनंत संग रहैं लहारैं ।**
**अति कमनीय किशोर चरित नित रच विस्तारैं ॥**
**जेते भूप हरि भक्ति रहे आज्ञा अनुसारी ।**
**श्रीबालकृष्ण प्रसाद भजन प्रभुता भई भारी ॥**
**श्रीहरिवंश प्रशंसचित बालकृष्ण की छाप ते ।**
**'चन्द्रसखी' जगमगे श्रीराधा इष्ट प्रताप ते ॥**

श्रीचन्द्रसखीजी संत–महात्माओं की सभा के एक अमूल्य आभूषण थे, ये सदैव श्रीयुगलकिशोर की लीलाओं की पद–संरचना करते थे और समस्त भक्तजनों को गुरु–रूप से देखते थे । 'श्रीचन्द्रसखी' ने गोस्वामी बालकृष्णजी महाराज से दीक्षित होकर भजनाराधन किया, जिससे उनकी प्रसिद्धि बहुत दूर–दूर तक प्रसरित हुई; ये अपने पदों के गान में गुरुदेव 'बालकृष्ण' की छाप लगाते थे । परमाराध्या 'श्रीराधा' की असीम अनुकम्पामयी महिमा से 'श्रीचन्द्रसखीजी' रसिक–समाज के भक्तिमय जगत में जगमगा रहे हैं।

श्रीचन्द्रसखी का जन्म ओड़छा (मध्यप्रदेश) के सनाढ्य ब्राह्मण कुल में लगभग सोहलवीं शताब्दी में हुआ था, इनका पूर्व नाम एवं जन्म तिथि अज्ञात है। बाल्यावस्था से ही 'चन्द्रसखी' श्रीराधाकृष्ण के विरह में व्याकुल रहा करते थे।

आचार्य श्रीहितहरिवंशजी द्वारा संस्थापित 'राधावल्लभ सम्प्रदाय' के अनुयायी 'गोस्वामी बालकृष्णजी महाराज' श्रीहितधर्म के प्रचार में बहुत संलग्न रहे; नागाओं की जमात लेकर गोस्वामीजी बहुत अधिक समय तक देशाटन करते रहे, एक बार भ्रमण करते हुए वे ओड़छा पहुँचे; वहाँ पर इन्होंने एक सनाढ्य ब्राह्मण को शिष्य बनाया (कुछ लोगों का कथन है कि यह दीक्षा वृन्दावन अखाड़ा रासमंडल 'हितमंडल' में हुई थी); यही ओड़छा–निवासी आगे जाकर 'चन्द्रसखी' के नाम से प्रसिद्ध हुए । 'गोस्वामी बालकृष्णजीमहाराज' की आज्ञानुसार 'चन्द्रसखी' ने भी प्रचार–प्रसार के लिए बहुत जगह भ्रमण किया.....श्रीगुरुदेव में इनकी अगाध भक्ति थी और यही कारण है कि इन्होंने अपने पदों की छाप में 'भज बालकृष्ण छवि' हमेशा ही जोड़ा।

श्रीचन्द्रसखी के अनेक शिष्य हुए, जैसे – श्रीरसिकसखी, श्रीगोपालदासजी इत्यादि। 'चन्द्रसखी के पद' अति सरल–सहज–सरस होने से काव्य की अद्भुत रसमयी अलौकिक निधि हैं, इनके पदों में विनय, चितवन, मान, दान, वेणु–वादन, विरह, भ्रमरगीत इत्यादि सभी श्रीकृष्णलीलाओं का बड़ा ही मनोरम गुणगान हुआ है और श्रीरामोपासना सम्बन्धित रचनाएँ भी मिलती हैं, जिससे संकीर्णता से शून्य अति उदारता का भाव सहज ही स्पष्ट दिखाई देता है –

**रही रे कुँवारी धनुष नहीं टूटे रे।**
**पिता प्रण लीयो धनुष तोड़ण को ॥**
**देस देस का भूप बुलाया, कठिण नहीं उठे रे ।**
**चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छबि, या तो प्रण नहीं छुटे रे ॥**

चन्द्रसखीजी के पदों का सम्मान संगीतकारों में भी अधिक दिखाई देता है, प्रायः सभी लोग इनके रचित पदों को गाते हैं; वास्तव में इनकी पद–संरचना की रक्षा का सर्वाधिक श्रेय संगीत के कलाविदों व भक्तजनों को ही है।

'श्रीचन्द्रसखी' का नित्य निकुंज–लीला में कब प्रवेश हुआ, यह अकथनीय है; आपने अपनी वृद्धावस्था 'ब्रजभूमि' में ही बिताई होगी, ऐसा अनुमान है; आपकी बैठक 'ओड़छा मड़ैया' में है, आपके नाम की कुंज 'वृन्दावन में केशीघाट' पर धीरसमीर के समीप ही स्थित है (केशीघाट पर एक छोटा मन्दिर है), जिसके चारों ओर ग्वालवालों व ब्रजवासीजनों का निवास है, मन्दिर–परिसर में कोई विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं मिलती है।

# श्री राधा

श्री चन्द्रसखीजी के संकलित पद

## अनुक्रमाणिका


| क्रमांक | पद | पृष्ठांक |
|---|---|---|
| १. | अकेली मत जाओ राधे | ४४ |
| २. | अनोंखौ जायौ ललना | ७ |
| ३. | अपनी डगर चल्यो जा रे बृजवास | ६९ |
| ४. | अपनौ गाँव लेउ नँदरानी | २५ |
| ५. | अब कहाँ जायगो रे, लीन्हो | २५ |
| ६. | अब चलि आई राधे बनि कै | १२ |
| ७. | अब रथ फेर मुरलिया वारे | ६६ |
| ८. | अरी ए री ग्वालिन | ४३ |
| ९. | आज बिरज में होरी रे रसिया | ३७ |
| १०. | आज वृन्दावन रास रच्यौ | ५४ |
| ११. | आवत हैं वन से लिएँ गैया | १० |
| १२. | इत आई बोले मोरा रे | ६१ |
| १३. | उठोजी अब जागो नंदकिशोर | ९ |
| १४. | ऊधौ तेरी हम पै बचै न पाती | ६८ |
| १५. | ऊधौ नंदलालजी सें | ६५ |
| १६. | ऊधौ वेग्याँ जाज्यो जी | ६५ |
| १७. | ए री कुबजा ने जादू डारा | ६७ |
| १८. | ए री माँ बंसी वारौ कान्ह | २० |
| १९. | ए री मैं खड़ी निहारूँ बाट | ६२ |

२०. ए री सखी कुबजा के सिखाये.....६८
२१. ए री सखी, तैनें कहीं देखा रे.....६६
२२. ककरेजी तेरो चीर कहाँ भीज्यौ.....३१
२३. कजरा न दिया राधे.....१३
२४. कन्हैया झूलै झुलना.....७
२५. कन्हैया ने घेर लई कुञ्जन में.....३५
२६. कन्हैया ने हमसे मचाई होरी.....३५
२७. कन्हैया मेरी गागर भर दैहो.....१५
२८. कबकी ठाड़ी सेवाकुंज में.....७३
२९. करनी कर लै, हरि गुन गा लै.....५७
३०. करमन की गति न्यारी.....६९
३१. करुना निधान सुनिए.....२
३२. कहाँ बसिया, मोहन! रातड़ली.....७०
३३. काँकरिया मत मारौ साँमलिया.....१६
३४. कान्हा धरे रे मुकट खेलें होरी.....३२
३५. कान्हा धरे रे मुकट.....३३
३६. कान्हा बैठौ कदम की डारिया.....४४
३७. कारी कामर वारौ री मेरौ लाला.....४५
३८. काली दह पै खेलन आयौ री.....४३
३९. कुछ दोष नहीं कुबजा.....६५
४०. कैसी बंसी बजाई बलवीर.....४८

४१. कैसी होरी मचाई.....३४
४२. कैसे आऊँ रे साँवरिया.....५३
४३. कैसे कटे दिन रात मोहन.....५०
४४. कैसे ब्याहूँ राधे.....१३
४५. कैसे लौटूँ रे बिहारी नंदलाला.....२८
४६. कोई कहियो रे मोहन आवण की.....६२
४७. कौन गुनाह दधि लूटी रे कान्हा मोरी.....२१
४८. कौन-सी ने डार दियौ री टौंना.....८
४९. खिरक बिच क्यों ठाड़ी राधा प्यारी.....१०
५०. खेलन आयौ री, दुपहैरी में.....४२
५१. गागरिया घर धरि आऊँ.....५५
५२. गागरिया जनि फोरौ लाल जी.....१६
५३. गावत श्याम सखिन संग गोरी.....४८
५४. गिर न पड़े गोपाल.....४५
५५. गुवालिन गोकुल की.....३१
५६. घूँघर वाले बाल राधे.....१३
५७. चलो सखी वृन्दावन चलिये.....४७
५८. चलौ गुइयाँ आज खेलैं होरी.....३३
५९. चलौ री सखी, सौ गए नन्द किशोर.....३९
६०. चार बरन में सोई बड़ा.....५६
६१. छाँडो लंगर मोरी बहियाँ गहो ना.....२१

६२. छोटी-सी लाड़ी रामभजन में.....३
६३. जमुना के तीर कान्हा.....४७
६४. जय जय जशोदा नन्दन की.....४
६५. जशोदा तेरे लाला ने मेरी दई है.....२४
६६. जशोदा रो प्यारो म्हाँने.....७०
६७. जशोदा लेत लला कों कनियाँ.....८
६८. जा रे मोहन तोते प्रीत लगाई.....६२
६९. जानें कब लेवै कूँ.....५५
७०. जानै रे कोऊ वैद न मन की.....५४
७१. जावा दे गुमानीड़ा कृष्ण.....१७
७२. जावा दे, सलूणा कान्हा.....१७
७३. जावो-जावो कन्हाई.....२०
७४. जुलम कर डार्‌यौ री.....८
७५. झुलइयौ मैया श्यामसुन्दर पालना.....७
७६. ठगना ठाकुर छै महाराज.....७२
७७. डगर बताय जा.....५१
७८. डगर बताय दे, मैं तो साँवरे.....५४
७९. डगर मोरी छाँड़ौ श्याम.....३६
८०. डस खायो जी भँवर कालो नाग.....४२
८१. डस गयौ कालियो नाग.....४१
८२. डस गयौ रे कालियो नाग, राधेजी.....४१

८३. तनक दही ऐ पिवा जइयो.....११
८४. तुम तो जावो राधे.....१४
८५. तू टेढ़ौ, मेरी टेढ़ी रे गगरिया.....१७
८६. तेरी साँवरी सूरत मन बसिया.....३०
८७. तेरे बाँके मुकुट की छबि न्यारी.....६
८८. तेरौ मुख नीकौ कि मेरौ राधा प्यारी.....२९
८९. तैं मेरो मन मोह्यो बंसी वाला.....४९
९०. दधि दूँगी रे साँवरिया.....४९
९१. दधि पी लै श्याम सलौना.....१२
९२. दधि मथत ग्वालि गरबीली है.....११
९३. देखि सखी री मेरौ मन मोह्यौ.....४६
९४. देखो री बाँसरी में.....४९
९५. दो नैना में राधे बिलमाई.....४७
९६. दोऊ मिल करत प्रेम की बतियाँ.....२९
९७. न छेड़ौ, गारी दूँगी.....१५
९८. नंदलाला दही मेरौ खाय गयौ री.....२३
९९. नदरानी भलो सुत जायौ ए.....२४
१००. नन्द के खबर परेगी तने आज रे.....१८
१०१. ना जानूँ कद घर आसी.....६०
१०२. नाचै नंदलाल नचावै वाकी मैया.....९
१०३. नीकौ लगै वृन्दावन.....५८

१०४. नैक पठै दै मोहनजी की मैया.....१०
१०५. पनघट दै छोड़.....१४
१०६. परसूँ जो पिया आवण.....६३
१०७. पलक न लागै, स्याम बिन.....६६
१०८. पाती सखी माधौ जी की आई.....६४
१०९. बंसी की टेर सुनूँगी.....४७
११०. बंसी जमुना पै बाज रही.....४६
१११. बंसी बजाई साँवरे.....४८
११२. बंसीवाला हमारी गली आजा.....६१
११३. बता दे सखी साँवरे.....५५
११४. बताय दे कान्हा इँडुरी कौ चोर.....१९
११५. बलिहारी लाल तेरे आमन की.....५
११६. बसो मेरे नैनन में नंदलाल.....६९
११७. बाजै-बाजै रे लाल.....९
११८. बाबा नन्द कौ लाला रसिया रे.....६९
११९. बीड़ी बनावै राधा प्यारी.....३१
१२०. बृज की रज हम.....५७
१२१. बोल-बोल म्हाँरा नन्दजी रा लाल.....६३
१२२. ब्रज की तोय लाज मुकुट वारा.....४५
१२३. ब्रजमंडल देस दिखाय.....५८
१२४. ब्रजमंडल देस दिखावो रसिया.....५८

१२५. भजौ मन राधे नंद किसोर.....३
१२६. भजौ सुन्दर श्याम मुकुटधारी.....३
१२७. भले से गिरधारी.....५२
१२८. भोर ही बाजी री मुरलिया.....४६
१२९. मंगल आरति कीजै भोर.....१
१३०. मंगल आरति नन्दकुँवर की.....१
१३१. मत दही मेरो लूटो.....२२
१३२. मत मारो पिचकारी.....३२
१३३. मथुरा जावोला तो नंद की दुहाई छै.....७०
१३४. मथुरा मत जा गिरवर धारी.....७३
१३५. मथुरा में हरि सर्व मई.....२१
१३६. मदन मोहन जी सूँ लगन.....५०
१३७. मदन मोहन मेरी विनती सुनौ.....४
१३८. मन लाग्यौ री श्याम.....५०
१३९. मन वृन्दावन चाल बसो रे.....५३
१४०. मनमोहन कुञ्ज बिहारी जी.....२२
१४१. माई मैं लियौ है गोविन्द मोल.....७१
१४२. माखन की चोरी छोड़, साँवरे !.....२६
१४३. माधो जी ने कैयाँ बिसाराँ जी.....५९
१४४. माधौ जी, मैं न भई वन-मोर.....६७
१४५. माधौ जी, वैरागिन मैं न भई.....६७

१४६. मान तजि चल राधा.....३९
१४७. मान तू गुमान भरी है री राधा.....३८
१४८. मानत ना, जसोदा ! तेरौ बनवारी.....२५
१४९. मारग म्हाँरो छोड़ द्यो गिरधारी.....१८
१५०. मिलता जाजो मुरारी.....७१
१५१. मिलता जाज्यो राज गुमानी.....७२
१५२. मुकुट पर वारी जाऊँ, नागर नंदा.....६
१५३. मुकुट पर वारी जाऊँ.....५६
१५४. मेरी उरझी लट सुरझाय जइयो.....२८
१५५. मेरी दधि की मटुकिया लै गयौ री.....२३
१५६. मेरे आँगण में बंसी बजाय साँवरा.....७१
१५७. मेरे नैनन में रास-रस.....५३
१५८. मेरे हृदय में आन विराज.....२
१५९. मेरौ मन लै गयो.....६१
१६०. मेरौ मन हर लीनौ.....५२
१६१. मैं जमुना न जाऊँ राधे.....३५
१६२. मैं तो तोरा फुलवा बिनन गई श्याम.....२७
१६३. मोय जमुना भरन दे पानी.....१५
१६४. मोरी अँखियाँ गुलाबी कर डारी रसिया.....३७
१६५. मोहन के कान लगी कुबड़ी.....६६
१६६. मोहन चलो जी कदम की छैयाँ.....२७

१६७. मोहन तुम जाणे दे मोय घरवा.....२३
१६८. मोहन मेरी गगरी उठाते जइयो.....१५
१६९. म्हाँरी थाँरी नाहिं बणें गिरधारी.....४४
१७०. म्हाँरो कोण गुन्हा तकसीर.....५९
१७१. म्हाने प्यारो लागे थारो नट वारो भेस.....७०
१७२. रंग रसिया खेलै फाग.....३३
१७३. रंगीलौ गुमानी कान्ह.....७३
१७४. रसिया बन्यौ मदनमोहन प्यारे.....३४
१७५. राधे आई सजि कै देखो.....१२
१७६. राधे फूलन मथुरा छाई.....२७
१७७. राधेश्याम मोरी रँग दो चुनरिया.....५१
१७८. रुक्मणी जी के मन में बस गये स्याम.....३७
१७९. लागै वृन्दावन नीकौ.....५७
१८०. लिख भेजूँ सन्देशौ.....६४
१८१. लेता जाजो जी साँवरिया.....७१
१८२. वन आयो आप बनवारी.....६
१८३. वारी श्याम बलिहारियाँ.....५२
१८४. वृन्दावन आज मची होरी.....३२
१८५. वो दिन क्यूँ नहीं चितारो.....६४
१८६. श्याम की वंसी वन पाई.....१९
१८७. श्याम जगावै आधी रतियाँ.....३९

१८८. श्रीकृष्ण मेरी गलियों में.....५१
१८९. श्रीराधारानी ! दै डारौ ना बाँसुरी मोरी.....१९
१९०. सखी तेरौ नाम.....१४
१९१. सब सखियन में राधे बड़ी हैं.....५६
१९२. साँची कह दो महाराज.....६०
१९३. साँवरिया ने कहज्यो समुझाय.....६४
१९४. साँवरो जग तारन को आयौ.....५
१९५. साँवरौ होरी में म्हारे लग जाएगी.....३६
१९६. साँवरौ होली खेलन जानैं .....३६
१९७. सुदामा कहै भामिन तें.....३८
१९८. सोवत राधा प्यारी, कृष्ण ने.....४०
१९९. सोवत राधा प्यारी.....४०
२००. हम पर कुबजा सोक रची रे.....६८
२०१. हमारी इँडुरिया देउ कान्हा.....१८

## मंगलाचरन

**मंगल आरति नन्दकुँवर की । यशुमतसुत श्रीराधावर की ॥**
मंगल-जनम-करम कुल मंगल, मंगल जशुमत माखन चोर ।
मंगल मोर मुकुट कुण्डल छबि, मंगल मुरलि बजै घनघोर ॥
मंगल बृजवासी सब मंगल, मंगल गान करें चहुँ ओर ।
मंगल गोप ग्वाल सब मंगल, मंगल राधा नन्द किशोर ॥
मंगल नंद यशोदा मंगल, मंगल सुतहि खिलावें मोद ।
मंगल गिरि गोवर्धन मंगल, मंगल वृन्दावन नन्द किशोर ॥
मंगल कुञ्ज वासी सब मंगल, मंगल शोभा है चहुँ ओर ।
मंगल श्याम जमुन जल मंगल, मंगल धार कटै अघ डोर ॥
मंगल श्री हलधर सब मंगल, मंगल राधा जुगल किशोर ।
मंगल ये मूरति मन मोहै, 'चन्द्रसखी' की लगी चरनन डोर ॥

**मंगल आरति कीजै भोर ।**

मंगल मथुरा, मंगल गोकुल, मंगल राधा नन्द किशोर ॥
मंगल लकुट, मुकुट वन माला, मंगल मुरली है घनघोर ।
मंगल नन्दगाँव बरसानौ, मंगल गोवर्धन गिरि मोर ॥
मंगल वंशीवट तट यमुना, मंगल लता झुकी चहुँ ओर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मंगल बृजवासी की ओर ॥

# श्री राधा

## श्रीरामचन्द्रजी की स्तुति

**करुना निधान सुनिए, कछु करुना कान मेरी ।**
अब मेरी बेर राघो ! तुम सोवौ हो या जागो ॥
तुम कितेक पतितन तारे, कई गिनत गिनत कवि हारे ।
महाराज अवध बिहारी, तुम पर 'चन्द्रसखी' बलिहारी ॥

## सरस्वती वन्दना

**मेरे हृदय में आन विराज, सरस्वती तुम माता ॥**
चातुर तेरौ ध्यान धरत हैं, हिरदे में कर गान ।
भूली विद्या हमें बतइयो, दै बुद्धी और ज्ञान ॥ बुद्धि की तुम दाता...
कच्चे दूध न्हवाऊँ मैया, करूँ मैं आरती ।
माँग सिंदूर भोग कूँ मेवा, मुखड़े में नागर पान ॥ बुद्धि की तुम दाता...
हंस सवारी वीन बजावै, कर सोलह श्रृंगार ।
श्वेत वरन आभूषन सोहैं, गल मोतियन को हार ॥ बुद्धि की तुम दाता...
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन चित लाय ।
वो मोहन अलगोजा वारौ, लायौ संग लिवाय ॥ बुद्धि की तुम दाता...

# श्री राधा

## श्रीइष्ट-आराधन

**भजौ सुन्दर श्याम मुकुटधारी ।**
बदन कमल पर कुंडल झलकें, अलकैं सोहैं घूघरवारी ॥
उर वैजंती माल विराजै, वनमाला राजै गुंजन वारी ।
केसर भाल, तिलक सिर सोहै, मुरली की छबि है न्यारी ॥
पायन में पैजनिया सोहैं, गदगद आवत गिरधारी ।
वंशीवट तट रास रच्यौ है, संग लिए राधा प्यारी ॥
वृन्दावन में खेलत डोलत, विहार करत हैं बनवारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल की बलिहारी ॥

**भजौ मन राधे नंद किसोर ।**
मात जसोदा पलन झुलावे, हाथों में रेशम डोर ॥
नंदबाबा के आँगन खेलत, घुँघरुन की घनघोर ।
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, बंसी बजावै मुख मोर ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की छबि ओर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, राधा कृष्ण री जोर ॥

**छोटी-सी लाड़ी रामभजन में कैसे लागी ।**
सासू बोली सुन मेरी बहुअल, एसा काम नहिं कीजै ।
राम नाम तो पीछै लीजै, घर का धंधा कीजै ॥
बहुअल बोली सुन मेरी सासू, एसी सीख नहिं दीजै ।
राम नाम तो मुख ते लीजै, हाथाँ धंधा कीजै ॥
न्हाती धोती मन्दिर जाती, नित चरणों में रहती ।
सासू बैठी टम-टम झाँकै, बहू वैकुंठा जासी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, सुरग पालगी आसी ॥

## आराध्य-स्तुति

**जय जय जशोदा नन्दन की, जय वंदन की ।**
भाल बिसाल माल मोतियन की, खौर बिराजै चंदन की ।
बैठ पताल कालिनाग नाथ्यौ, फन पर निरत करंदन की ।
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, हाथ लकुटिया चंदन की ।
इन्द्र ने कोप कीयौ ब्रज ऊपर, नख पर गिरवर धारन की ।
केसी मारे कंस पछारे, असुरन के दल भंजन की ।
उग्रसैन को राज तिलक दियौ, रक्षा करी सब संतन की ।
घंटा ताल पखावज बाजै, गहरी धुनि सब संतन की ।
आप तो जाय द्वारिका छाये, पल पल लहर तरंगन की ।
आस पास रत्नाकर सागर, शोभा करत किलोलन की ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल रज बंदन की ॥

**मदन मोहन मेरी विनती सुनौ ।**
करुना सिन्धु जगत बंधु, संतन हितकारी ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, कुंडल की छबि न्यारी ।
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावें, ओढ़े कामरि कारी ॥
वृन्दावन की कुँज गलिन में, निरत करैं गिरधारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल बलिहारी ॥

श्री राधा

**साँवरो जग तारन को आयौ ।**

निशि दिन तेरौ ध्यान धरत हैं, सुर नर पार न पायौ ।
भानसुता में कूद परे हरि, विषधर जाय जगायौ ।
फन पै नाँच पताल पठायौ, तीन लोक जस गायौ ।
भारत में प्रन पूरौ कीयौ, अर्जुन रथ पर आयौ ।
गीता ज्ञान दया कर दियौ, रूप विराट दिखायौ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, विमल विमल जस गायौ ॥

**बलिहारी लाल तेरे आमन की, मन भावन की ।**

इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में रास रचावन की ॥
चुन चुन कलियाँ मैं हार बनाऊँ, यदुवर उर पहरावन की ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहैं, मधुर मधुर मुसकावन की ॥
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, मधुरी सी वीन बजावन की ।
पैठि पताल कालिया नाथ्यौ, फन पर निरत करावन की ॥
इन्द्र कोप चढ़्यौ बृज ऊपर, नख पर गिरवर धारन की ।
केस पकरि हरि कंस पछार्यौ, जमुना धार बहावन की ॥
उग्रसैन को राजतिलक दियौ, उनहूँ के वंस बढ़ावन की ।
वृन्दावन में रास रच्यौ है, सहस्त्र गोपि एक कान्हन की ॥
जल बूढ़त गजराज उबार्यौ, साग विदुर घर पावन की ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित लावन की ॥

श्री राधा

**वन आयो आप बनवारी ॥**

सिर धरि चंदन खौरि, मोतियन की गलमाला डारी ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी ॥
वृन्दावन की कुँज गलीन में, चाल चलत अति प्यारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणकमल पर बलिहारी ॥

**तेरे बाँके मुकुट की छबि न्यारी, सोभा भारी ।**

यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, काँधे कवरिया है कारी ॥
वृन्दावन में रास रच्यौ है, सहस गोपि एक गिरधारी ।
पीताम्बर की कछनी काछै, मुरली बजावै बनवारी ॥
वृन्दावन की कुँज गलिन में, विहरत हैं प्रीतम प्यारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल बलिहारी ॥

**मुकुट पर वारी जाऊँ, नागर नंदा ।**

सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यों तारन में चन्दा ॥
सब सखियन में राधा बड़ी हैं, ज्यों नदियन में गंगा ।
सब भगतन में भरत बड़े हैं, जोधन में हनुमंता ॥
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यौ, फन फन निरत करंदा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, काटो जमके फंदा ॥

श्री राधा

## श्रीकृष्णजन्म-बधाई

**अनोंखौ जायौ ललना, मैं वेदन में सुनि आई ।**
मथुरा में जाने जनम लियौ है, गोकुल में झूलै पलना ॥ मैं वेदन में
लै वसुदेव चले गोकुल कूँ, मारग दै गई जमुना ।
कर श्रंगार पूतना चाली, पलना में ते लै लियौ ललना ॥ मैं वेदन में...
रतन जटित को बन्यौ पालनौ, रेशम के लागे फुँदना ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, याको घर-घर खेले ललना ॥ मैं वेदन में...

**झुलइयौ मैया श्यामसुन्दर पालना ।**
काहे कौ तेरौ बन्यौ पालनौ, काहे के लागे फुँदना ।
सोने को मेरो बन्यौ पालनौ, रेशम के लागे फुँदना ।
जा लाला को पलना झुलावै, ताय देऊ कँगना ।
काहू गुजरिया की नजर लगी है, रोय गयौ ललना ।
राई नौन उतार यशोदा, किलक उठे ललना ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरजीवौ ये ललना ॥

**कन्हैया झूलै झुलना, नेंक हौले झोटा दीजौ ।**
मथुरा में याने जनम लियौ है, गोकुल में झूलै झुलना ।
काहे को तेरौ बन्यौ है हिडौला, काहे के लागे फुँदना ।
रतन जटित को बन्यौ हिडोलौ, रेशम के लागे फुँदना ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, याह सखी झुलावें झुलना ॥

**कौन-सी ने डार दियौ री टौंना ।**

मैं जमुना जल भरन जात री, मैंने सोमत छोड़ौ है ललना ।
मैं जमुना जल भर कें लाई, मैंने रोमत पायौ है ललना ॥
राई नौन उतारि जशोदा, कुरता टोपी से लगाय लाई रौंना ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, जुग जुग जीऔ मेरौ श्याम सलौंना ।

**जुलम कर डार्‌यौ री, या कारी कामर वारे ने ।**

मथुरा में हरि जनम लियौ है, गोकुल में बजे नगारे री ।
सब सोय गये याके पहिरे वारे, याके आप ही खुल गये तारे री ॥
करि सिंगार पूतना आई, याके छिन में प्रान निकारे री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, ये जीवन प्रान हमारे री ॥

## बाल-क्रीडा

**जशोदा लेत लला कों कनियाँ ।**

अपने लला को जामा सिलाऊँ, आठ कली नौ तनियाँ ॥
अपने लला को गहनौं गढ़ाऊँ, छल्ला छीप अगुलियाँ ।
कानन कों कुण्डल बनवाऊँ, बाहन बीच भुजनियाँ ॥
अपने लला कों काजर लगाऊँ, काजरु और ढिटनियाँ ।
मोरपंख कौ मुकुट विराजै, माथे पै खौर चंदनियाँ ॥
अपने लला कौ व्याह रचाऊँ, सुन्दर-सुन्दर ग्वालिनियाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, राधा-सी दुलहनियाँ ॥

**नाचै नंदलाल नचावै वाकी मैया ।**

रुझक झुमक पाँय नेवर बाजै, ठुमक ठुमक पाँय धरत कन्हैया ॥
दूध न पीवै कान्हा दहीय न खावै, माखन मिसरी कौ बड़ौ री खवैया ।
पाट पटम्बर कान्हा ओढ़ न जानै, कारी कमरिया कौ बड़ौ री ओढ़ैया ॥
वृन्दावन में रास रच्यौ है, सहस्त्र गोपिन में नाचै एक कन्हैया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल की मैं लेऊँ री बलैया ॥

**बाजै-बाजै रे लाल ! तेरी पैजनियाँ हो रुन झुनियाँ ।**

पैजनियाँ जे अधिक सुहावैं, मोह लिये सुर नर मुनियाँ ॥
नीले से अंग पै पीत झगुलिया, रत्न जड़ाव की पैजनियाँ ।
चंदन चर्चित अंग मनोहर, सिर पर सोहत पागनियाँ ॥
जसुमत सुत को चलन सिखावैं, अँगुली पकरि लिये दोउ जनियाँ ॥
छोटे छोटे चरन चतर्भुज मूरति, अलक झलक रही नागिनियाँ ॥
शिव ब्रह्मा जाकौ पार न पावैं, जाहि नचावैं ग्वालिनियाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तीन लोक के तुम धनियाँ ॥

**उठोजी अब जागो नंदकिशोर ।**

चंदा जागे सूरज जागे, तारे लाख करोर ॥
संग के गोपी ग्वाला जागे, वन में जागे मोर ।
ग्वालबाल सब द्वारे ठाड़े, वंसी की घनघोर ॥
ओर पास रत्नाकर जागे, और जागी वृषभान किसोर ।
ओर पास साधुन की मढ़ियाँ, बाजत संखन की धुन घोर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन मेरी डोर ॥

## गो-दोहन

**खिरक बिच क्यों ठाड़ी राधा प्यारी ।**

माथे हाथ दिए मन सोचत, कहाँ लगी तेरे प्यारी ॥
देखेंगे सो कहा कहेंगे, सुन वृषभान कुमारी ।
अब ही लाल गये गोअन में, आवन की है तैयारी ॥
बंसी बाज रही मोहन की, मोहि लई बृजनारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तन मन धन बलिहारी ॥

**आवत हैं वन से लिएँ गैया ।**

आगे-आगे गैया, पीछै-पीछै बछड़ा रामा, जा पीछैं मेरौ कुँवर कन्हैया ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै रामा, बगल में सोहै हरि कें काली सी कमलिया ।
ग्वालबाल सब संग में आये रामा, पीछे से आये बलदाऊजी के भैया ॥
गैया बछड़ा खिरक में बाँधे रामा, महलन में आ गयौ मेरौ कुँवर कन्हैया ।
गगनधूरि मुखड़े पर छाई रामा, लै अंचल पौछे वाकी मैया ॥
छोड़ौ बछरा लाओ दुहनियाँ रामा, झटपट दुहि लाऊँ राधे जी की गैया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हा हा खात, परति हरि के पैया ॥

**नैक पठै दै मोहनजी की मैया ।**

हठ कर बैठी सुघड़ ग्वालिनी, संग लिवाय चलूँगी कन्हैया ।
अति बिलखात मिलत नहीं गैया रामा, जाही के हाथ मिलेगी मेरी गैया ।
नंद हँसे जसुदा मुसकाई रामा, जाओ लाल ! दुहओ जाकी गैया ।
हँसि मुसिकाय कही मोहन ने रामा, हम ही अनौखे या ब्रज में दुहैया ।

ग्वालबाल सब पचि-पचि हारे रामा, पचिहारे बलदाऊजी से भैया ।
छोड़ो बछड़ा, लाओ दुहनियाँ रामा, झटपट दुहि दऊँ राधेजी की गैया ।
लेकर दूध गये महलन में रामा, झटक दई है श्रीराधेजी की नैयाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हा हा करि हरि की लेत बलैया ॥

## दधि-लीला

**दधि मथत ग्वालि गरबीली है ।**
बड़ी बड़ी अखियाँ नैनन में सुरमा रामा
भौंह चलावै कटीली है ॥ दधि मथत ...
बाँह भरा बाजूबन्द सोहै, कंगन कील सजीली है ।
गोरी-गोरी बहियाँ हरी-हरी चुड़ियाँ रामा,
बहियाँ चलावै ढीली है ॥ दधि मथत ...
अँगना में ठाड़ौ प्यारौ दधि जो माँगैं, वोह नहीं देत हठीली है ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि,
हरि के चरन बसीली है ॥ दधि मथत ..

**तनक दही ऐ पिवा जइयो, सुन बरसाने वारी ।**
सदल्योंनी माखन की लइयो, अपने ही हाथ खवा जइयो ।
जो तेरी सास लड़ै घर तोतें वाऊँ, ए सींग दिखा अइयो ॥
जो तेरौ पती सती ! तोय बरजै, वाऊ ऐ खिरक बताइ अइयो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन चित लाइ जइयो ॥

श्री राधा

**दधि पी लै श्याम सलौना ।**

काहे की तेरी बनी है मथनियाँ, कौन पात के दौना ?
आठ काठ की बनी है मथनियाँ, कदम पात के दौना ।
कौन घाट पै ग्वाल जुरे हैं, कौन घाट पर कान्हा ?
चीरघाट पर ग्वाल जुरे हैं, कालिन्दी पर कान्हा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित लाना ॥

## श्रीराधारूप-वर्णन

**अब चलि आई राधे बनि कै ।**

स्यालू सरस, कसव कौ लँहगा, चोली के बंद कसकै ।
मुख में पान नैन में सुरमा, माथे चन्द्रमा धरि कैं ।
नँहनी नँहनी दतियाँ, उजरी बत्तीसी, हँसति फूल मानौ झरकैं ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित धरि कैं ॥

**राधे आई सजि कै देखो, अब प्यारी आई सजि कै ।**

नैनन में कजरा, तिरछी नजरिया, माथे चन्द्रमा धरि कै ।
उजली बतीसी मुख में बिडिया, बोलै फूल मानौ बरसै । देखो...
बड़े-बड़े बिछुआ नँहने नँहने बाजे, ठुमकि-ठुमकि पग धरि कै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरण चित धर कै ॥ देखो...

# श्री राधा

**घूँघर वाले बाल राधे तेरे घूँघर वाले बाल ।**

सुरझावै सुरझत है नाहीं, अपने हाथ सम्हाल ।
रतन जतन कर वेनी गुह दई, मोतिन माँग सम्हाल ।
लै दरपन मुख देखन लागी, कैसौ बन्यौ सिंगार ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन बलिहार ॥

**कजरा न दिया राधे जुलम किया है ।**

जे कजरा मोहन बस कीन्हो, मोह लिया री राधे मोह लिया है ॥
जे कजरा मेरी मायके से आयौ, तुमने न लिया मोहन, तुमने न दिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरण राधे चित्त दिया है ॥

**कैसे ब्याहूँ राधे कन्हैयाँ तेरौ कारौ री ।**

घर-घर की वह गऊ चरावै, ओढ़ै कम्बल कारौ ॥
छीन झपट दधि खात बिरज में, कैसे चलेगो राधे को गुजारौ ।
मेरी राधा अजब सुन्दरी, तेरो कन्हैया कारो ॥
कारौ कारौ मत कहि ग्वालिन, है ब्रज को उजियारौ ।
नाग नाथ रेती पर डार्‌यौ, मारी फूँक कृष्ण भयौ कारौ ॥
पीताम्बर की कछनी काछैं, मोहन मुरली वारौ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कान्हा है त्रिलोकी सूँ न्यारौ ॥

# श्री राधा

## पनघट-लीला

**तुम तो जावो राधे ! पनियाँ भरन कूँ, प्रेम कौ फंद लगा लाव री ।**
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, वृन्दावन होकै आव री ॥
वो नंद जी कौ कुँवर अनाड़ी, तू अछूती कैसे आव री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, रंग में झकाझक हो आव री ॥

**सखी तेरौ नाम बताय दे पनिहारी ।**
कौन घर बहू कौन की बेटी, कहो कौन घर नारी ।
नंद घर बहू वृषभान की बेटी, श्रीकृष्ण घर नारी ।
सिर पर घड़ा, घड़े पर झारी, चाल चलै मतिवारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरन कमल की बलिहारी ॥

**पनघट दै छोड़, भरूँ गगरी ।**
सब सखियाँ जल भरन जात ही, मोहन रोक लई डगरी ॥
सखियन संग वृषभाननन्दनी, काँपन लाग गई पगरी ।
ग्वालबाल सब सखा कृष्ण के, ताक-ताक मारत कँकरी ॥
बरज रही बरज्यो नहिं मानत, श्याम करत झगरी-झगरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, सीस धरी तुम्हरी पगरी ॥

श्री राधा

**मोय जमुना भरन दे पानी, मत रोकै मोहन दानी ।**
या बृज में तुम भये अनौखे, रोकत नार विरानी ॥
घाट बाट सब रोकत डोलो, कैसे भरूँ जल पानी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मूरत देखि लुभानी ॥

**मोहन मेरी गगरी उठाते जइयो ।**
भारी गगरी उठत नाँहि हम पै, तुम नैक हाथ लगाते जइयो ।
मटकी उठाई कहा दोगी, ग्वालिन ! नैक घुँघटा खोल बतइयो ।
घूँघट में तुम का लोगे मोहन, कुँज गलिन में आय जइयो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, प्रीत के बोल सुनाय जइयो ॥

**कन्हैया मेरी गागर भर दैहो ।**
अजी, भला भर दे, सिर पै धर दैहो ।
हमरे सँग की दूर निकस गई, सास ननद कौ डर दैहो ।
हौं जमुना जल भरन जात ही, बहियाँ पकर मोय वर दैहो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणकमल तेरे सिर दैहो ॥

**न छेड़ौ, गारी दूँगी, रे भरने दे गगरी ।**
मैं जल भरने को आई, और संग सहेली लाई
पनघट पर रार मचाई, रे भरने दे गगरी ॥ न छेड़ौ ...
मैं असल बाप की जाई, तेरौ बदलौ लूँगी चुकाई ।

तेरी बंसी दूँ छिनवाई, रे भरने दे गगरी ॥ न छेड़ौ ...
मैं कंस राय ढिंग जाऊँ, और सारौ हाल सुनाऊँ
मन चाहयौ दंड दिलाऊँ, रे भरने दे गगरी ॥ न छेड़ौ ...
मोहि जानत नाहिं कन्हाई, वन-वन में गाय चराई
तो पै 'चन्द्रसखी' बलि जाई, रे भरने दे गगरी । न छेड़ौ ...

**काँकरिया मत मारौ साँमलिया ।**

काँकर मारौ तो कछु डर नाहीं, फूट न जाए मेरे सिर की गगरिया ।
गागर फूटे राम कछु डर नाहीं, भीज न जाए मेरे सिर की चुनरिया ।
चूँनर भीजै राम कछु डर नाहीं, लचक न जाए मेरी पतली कमरिया ।
'चन्द्रसखी' मोहन को मिलवौ, मिलै न बारम्बार साँवलिया ॥

**गागरिया जनि फोरौ लाल जी, नहिं तोय देउँगी गारी ।**

मैं जमुना जल भरन जात ही, बीच मिले गिरधारी ।
गागर फोरी मेरी बैयाँ मरोरी, मोतियन की लर तोरी ।
तुम हो ढोटा नन्दराय के, मैं वृषभानु दुलारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम जीते मैं हारी ॥

**तू टेढ़ौ, मेरी टेढ़ी रे गगरिया ।**
तू टेढ़ौ है नन्द बाबा कौ, मैं टेढ़ी वृषभान दुलरिया ॥
टेढ़ौ ही तेरौ मोरमुकुट है, मेरी तो टेढ़ी लाल सिर की इंडुरिया ।
टेढ़ौ ही तेरौ पचरंग पेचौ, मेरी तो टेढ़ी लाल सुरख चुनरिया ॥
जमुना भी टेढ़ी, टेढ़ी कलंगी, और टेढ़ी लाल गोकुल नगरिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरजीवी रहो श्याम सुँदरिया ॥

## गोपी-उद्गार

**जावा दे, सलूणा कान्हा, आई छूँ अकेली, सात सहेली म्हारे सर छै ।**
तुम ना तो जाणों कान्हा फिरूँ छू कँवारी, साँवरियो म्हारो वर छै ॥
जो तुम आवो कान्हा पतो रे बताऊँ, नदी के किनारे म्हारो घर छै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तन मन दीनाँ, अब काहे की कसर छै ॥

**जावा दे गुमानीड़ा कृष्ण, म्हारे डेरे काम छे ।**
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना किनारे म्हारो ग्राम छे ॥
म्हारे आँगन तुलसी का बिरवा, साँवरी सखी म्हारो नाम छे ।
जाणो नहीं तो पूछ लीज्यौ, कुञ्ज द्रुमन म्हारो धाम छे ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, श्रीराधा म्हारो नाम छे ।
कुञ्जभवन में ढूँडत डोलौं, रट म्हाने, बतायो कहाँ श्याम छे ॥

# श्री राधा

**मारग म्हाँरो छोड़ द्यो गिरधारी ॥**
उलटो हो ज्या कान्हा ! डगर छोड़ दे, बोझ भरै ब्रजनारी ।
सास बुरी, म्हारी बगड़ पड़ोसन, ननद सुने देगी गारी ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, तुम रोको ब्रजनारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारी ॥

**नन्द के खबर परेगी तने आज रे ।**
मैं जल जमुना भरन जात ही, बैंया मरोरी किन काज रे ॥
जात-पाँत कुल काँण न मानै, नेक न आवै लाज रे ।
'चन्द्रसखी' प्रभु अति ना कीजै, कंसराय को राज रे ॥

## ईंडुरी-चोरी

**हमारी इँडुरिया देउ कान्हा ।**
मेरी इँडुरी में जड़ रहे मोती । तेरी जात न जानूँ गोती ॥
मेरी इँडुरी में जड़ रहे हीरा । तेरी जात न जानूँ अहीरा ॥
मेरी इँडुरी में जड़ रहे पन्ना । तू घर घर डोलै है धन्ना ॥
अब मथुरा में मैं जाऊँ । तोय खुरचन पेड़ा लाऊँ ॥
अब पीहर में मैं जाऊँ । तोय कुरता टोपी लाऊँ ॥
तू 'चन्द्रसखी' को प्यारौ । तू सब ब्रज को रखवारौ ॥

# श्री राधा

**बताय दे कान्हा इँडुरी कौ चोर ।**
तू मत जानें कान्हा इकली-दुकली, सात सहेली मेरे साथ ।
तू मत जानें कान्हा दूर दिशा की, बरसानौ मेरौ गाँव ।
तू मत जानें कान्हा चुपकी रहूँगी, शहर करूँगी बदनाम ।
तू कान्हा मेरौ नाम न जानें, राधा प्यारी मेरौ नाम ।
तू मत जाने राजा घास-फूँस की, हीरा जड़े हैं किरोर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन मेरी डोर ॥

## बंसी-चोरी

**श्रीराधारानी ! दै डारौ ना बाँसुरी मोरी ।**
जा बंसी में मेरे प्रान बसत हैं, सो बंसी गई चोरी ॥
सोने की नाहीं कान्हा ! रूपे की नाहीं, हरे बाँस की पोरी ।
काहे से गाऊँ राधे ! काहे से बजाऊँ, काहे से लाऊँ गैया घेरी ॥
मुख से गावौ कान्हा, ताल सों बजावौ, लकुटी से लाओ गैया घेरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन की चेरी ॥

**श्याम की वंसी वन पाई ।**
उठो री जसोदा मैया खोलौ री किवाड़ी, मैं बंसी घर देवन कूँ आई ॥
बहुत दिनन के उनीदे री मोहन, सोवन दै वृषभान की जाई ।
इतनी सुनि कै निकस आये मोहन, बंसी के संग मेरी पोथी चुराई ॥
कानन सुनी न आँखन देखी, चलो तो दऊँ मैं ठौर हु बताई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, दोऊ पढ़े एकहि चतुराई ॥

श्री राधा

## दान-लीला

**ए री माँ बंसी वारौ कान्ह ।**

चन्दवदन मृगलोचन राधे, मोह्यौ श्याम सुजान ॥
गढ़ मथुरा की गूजरी, गढ़ गोकुल को कान्ह ।
अधिबिच झगड़ौ माँड़ियो, सरे माँगे दही कौ दान ॥
कब के तुम दानी भये, कब हम देती दान ।
बाबा नन्द की धेनु चरावै, देख्यौ अनौखौ कान्ह ॥
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल झलकत कान ।
मुखड़े ऊपर मुरली सोहै, केसर तिलक लुभान ॥
जमुना के नीरे तीरे रास रचावै, बंसी में सुर ग्यान ।
बंसी बजा मेरौ मन हर लीनौ, मार विरह को बान ॥
सुर नर मुनि जन ध्यान धरत हैं, गावत वेद पुरान ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन मेरौ ध्यान ॥

**जावो-जावो कन्हाई, मोसों रार क्यों मचाई ॥**

जान गई तुम्हरी चतुराई, कुबरी सौं तुम प्रीत लगाई ।
लपट-झपट मोरी फोरी मटुकिया, और चुरियाँ करकाईं ॥
कबहूँ न दीनौ दान कन्हाई, नई दान की रीति चलाई ।
कबहूँ न पैहौ दान कन्हाई, नाहक करत ढिठाई ॥
वन-वन में तुम धेनु चराई, अपने मन में करत बड़ाई ।
कंसराय सों जाय पुकारूँ, भूल जाय ठकुराई ॥
ग्वालबाल सब लिये बुलाई, कछु खाई कछु धरनि गिराई ।
दई मटुकिया फोड़ श्याम पर, 'चन्द्रसखी' बलि जाई ॥

**मथुरा में हरि सर्व मई ।**

हम दधि बेचन जात वृन्दावन, मारग में मेरी बाँह गही ॥
मेरौ तौ कन्हैया पाँच बरस कौ, सो कैसे तेरी बाँह गही ।
जिन गलियन मेरौ फिरै री कन्हैयाँ, उन गलियन राधे काहें को गई ॥
जमुना के तीर कदम की छैंया, मोहन मुरली बाज रही ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणकमल चित लाय रही ॥

**कौन गुनाह दधि लूटी रे कान्हा मोरी ॥**

वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, धर बहियाँ झकझोरी ।
या बृज में नहीं हितू हमारौ, लोग कहैं सब झूँठी ॥
लपट-झपट मोरी बहियाँ मरोरी, सिर की गागर फूटी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हा हा करतहिं छूटी ॥

**छाँडो लंगर मोरी बहियाँ गहो ना ।**

जो तुम मोरी बहियाँ गहो हो, नैना मिलाय मेरे प्रान हरो ना ॥
हम तो नार पराये घर की, हमारे भरोसे गोपाल रहो ना ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, रीति छाँडि अनरीत करो ना ॥
जाय पुकारों कंस राय पै, तुम्हरी बातें एक सहों ना ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल चित टारे टरे ना ॥

# श्री राधा

**मनमोहन कुञ्ज बिहारी जी । मत रोको मोरी गैल ॥**
मैं दधि बेचन को जाती, मेरे संग सहेली साथी,
मैं तुम से हूँ सरमाती जी । मत रोको मोरी गैल...
तुम ओढ़ कमरिया कारी, अब कहा करहु बनवारी,
हम छाँड़ि चले बृज सारी जी । मत रोको मोरी गैल...
हम जमुना जी पै जावें, सब तुम्हरो हाल सुनावें,
मन चाहो दंड दिलावें जी । मत रोको मोरी गैल...
तुम्हरो 'चन्द्रसखी' जस गावै, पर पार कोऊ नहिं पावै,
भव आवागमन छुडावै जी ॥ मत रोको मोरी गैल...

## दधि-लूट

**मत दही मेरो लूटो, मैं छूँ मथुरा की कान्हा गूजरी ।**
दधि की मथनियाँ भई है पुरानी, नई तो मथनियाँ लाई ।
छींक भई मैं घर ते निकसी, जाकै रोल मचाई ॥
दधि कौ दान कदे नहिं देवाँ, घणा दिनाँ सूँ आई ।
जाय पुकारूँ कंसराय को, भूल जाय ठकुराई ॥
दधि को दान कदे नहिं छोड़ाँ, मत कर मान बड़ाई ।
ग्वालबाल सब सखा बुलाकर, महीड़ो दियो लुटाई ॥
धन हो गोकुल, धन हो मथुरा, धन हो जशुधा माई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणाँ चित लाई ॥

**मोहन तुम जाणे दे मोय घरवा ।**

मैं दधि बेचन जात वृन्दावन, बीच मिले कान्हा ठगवा ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बिन फागुन कैसे फगवा ॥
चोवा चन्दन और अरगजा, केसर गागर भरवा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणकमल चित धरवा ॥

## गोपियों का उलाहना

**नंदलाला दही मेरौ खाय गयौ री ।**

कछु खायौ, कछु धरन गिरायौ, ग्वालन हाथ लुटाय गयौ री ।
लाख कही मेरी एक न मानी, मन चाही बात बनाय गयौ री ।
तोड़ फोड़ सब दई मटकियाँ, जोरी कर धमकाय गयौ री ।
जाय कहौं जसुदा के आगे, तेरौ लाल इतराय गयौ री ।
साँवरी सूरत माधुरी मूरति, जो मन माँहि समाय गयौ री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, आवागमन मिटाय गयौ री ॥

**मेरी दधि की मटुकिया लै गयौ री ।**

आप खाय और ग्वाल खवावै, रीती कर लुढकाय गयौ री ॥
छोटे छोटे हाथ जाकी बहियाँ हूँ छोटी, छीकौ हाथ कैसे पाय गयौ री ।
दधि कौ तो दधि मेरौ वाने खायौ, ईंडुरी कू जमुना बहाय गयौ री ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, तिरछी नजरिया दिखाय गयौ री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हँस-हँस कर बतराय गयौ री ॥

**जशोदा तेरे लाला ने मेरी दई है मटुकिया फोर ।**

दही की मटुकी धरैं सीस पर, मैं आई बड़े भोर ॥
आन अचानक कुञ्ज गलिन में, मिल गयौ नन्दकिशोर ।
मोसे कहत नाँच मेरे संग में करि बिछुअन की घोर ॥ जशोदा तेरे...
हम न बसेंगी अब या ब्रज में, लियौ सबन मुख मोर ।
छोटी-सी कोई और नगरिया, लेंगी अनत टटोर ॥ जशोदा तेरे...
गहवरवन और खोरसाँकरी नित नई लीला होय ।
मारग मेरौ घेर लियौ है, मटकी डारी फोर ॥ जशोदा तेरे...
'चन्द्रसखी' यों कहे ग्वालिनी, मती जतावै जोर ।
प्रीत करो या नन्दनदन ते जैसे चन्द चकोर ॥ जशोदा तेरे...

**नंदरानी भलो सुत जायौ ए ।**

बरजौ तो बरज्यो नहीं मानें, नाय डरे वो डरायो ए ।
फलसो खोल खिकियाँ खोलै, पीढ़े ऊपर ऊखले मेलै,
छींको तोड़ बगायो ए । नदरानी...
मटकी उतार आगे धर मेली, मक्खन भोग लगायो ए ॥ नदरानी...
नौ लख धेनु नन्दराजा घर, चोराँ के चोर कहायो ए ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरण चित लायो ए ॥ नदरानी.

# श्री राधा

**अपनौ गाँव लेउ नँदरानी, हम कहुँ अन्त रहिंगे जाय ।**
सूनी-सी बाखर खोलिकें साँकर, घर भीतर घुस जाय ।
छीके पै ते माखन खावै, दूध देय फैलाय ॥
हम जमुना स्नान करन जायँ, चीर चोर लै जाय ।
लैके चीर कदम पै बैठ्यौ, गूँठा देय दिखाय ॥
हम दधि बेचन जाँय वृन्दावन, मारग में मिल जाय ।
देखत में वारौ सौ लागे, हाल बड़ौ है जाय ॥
साँवरी सूरत माधुरी मूरति, मो मन गई सँमाय ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, बार बार बलि जाय ॥

**मानत ना, जसोदा ! तेरौ बनवारी ।**
घर कौ छोड़्यौ माखन मिसरी, गुजरी की छाछ लगै प्यारी ।
घर कौ पलँग रेशमी छोड़्यौ, गुजरी की खाट लगै प्यारी ॥
घर कौ छोड़्यौ साल दुसाला, कुब्जा की गुदड़ी लगै प्यारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल की बलिहारी ॥

**अब कहाँ जायगो रे, लीन्हो श्याम पकरि कै ।**
नरम कलइया हरि की पकड़ी, पकड़ी बाँह सँभल कै ।
ऐंठ ऐंठ बल खामन लाग्यो, अब कहाँ जाइगौ छल कैं ।
दाव मेरौ लग गयौ रे । लीनौ श्याम
छीन-छीन दधि खायौ मेरे कान्हा, आगे मथनियाँ धरि कैं ।
हमको देख बाल बन बैठ्यौ, खाय लै मनस्या भरि कैं ।
क्यों सरमाय गयौ रे । लीनौ श्याम

सास ननद मोय बुरी बतावें, नाँव चोर री धरि कैं ।
आ बहू ! छिनगारी मिलगी, तानौ दैं हँसि-हँसि कै ।
सारौ घर खा गयौ रे । लीनौ श्याम
मात जशोदा मही बिलोवै, कहाँ गयौ कान्हा लड़िकै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मोर मुकुट सिर धरि कै ।
दरस दिखाय गयौ रे । लीनौ श्याम

## श्रीयशोदा मैया की शिक्षा

**माखन की चोरी छोड, साँवरे ! मै समझाऊँ तोय ।**
मोसें कही गउअन पर जाऊँ, रह्यौ खिरक में सोय ॥
काऊ ग्वालिन ते आँख लगीं ये, तेरी गई कमरिया खोय ॥
नौ लख गाय नन्दबाबा कें, नित नयौ माखन होय ।
माखन चोर कहें सब ग्वालिन, लाज लगै है मोय ॥
आई सगाई बरसाने से, नित उठ चर्चा होय ।
राज घरा की लाड़िली वो, हँसी हमारी होय ॥
यह चोरी मोसें नहिं छूटै, होनी होय सो होय ।
'चन्द्रसखी' मैया के आगे, दियौ कन्हैया रोय ॥

## रसकेलि-क्रीडा

**राधे फूलन मथुरा छाई ।**

कितने फूल सरग ते उतरे, कितने मालिन लाई ।
उड़ि-उड़ि फूल गिरे जमुना में, राधेजी बीनन आईं ।
चुनि-चुनि कलियाँ हार बनावैं, स्यामहिं को पहराई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित लाई ॥

**मैं तो तोरा फुलवा बिनन गई श्याम ।**

फुलवा बिनन गई कलियाँ चुनन गई, एक पंथ दो काम ।
घर जाऊँ तो मेरी सास लड़ेगी, नाम होत बदनाम ।
बहियाँ मुरक गई चुड़ियाँ करक गईं, अब का करूँ मेरे राम ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, प्रगटे मथुरा धाम ॥

**मोहन चलो जी कदम की छैयाँ, कदम की छैयाँ ।**
**मोरे डारौ गले में बैयाँ ॥**

राधेरानी, तेरे हार हिये में सोहै री, हिये में सोहै ॥
तेरी चितवन मेरौ मन मोहै ॥
मोहन तू जमुना निकट भयौ ठाड़ौ, निकट भयौ ठाड़ौ ।
मोसें नेहा लगायौ अति गाढ़ौ ॥
राधेरानी तू तो जमुना निकट भई ठाड़ी, निकट भई ठाड़ी ।
मोरी लगी है प्रीत अति गाढ़ी ॥
मोहन तेरे कान कुण्डल, गले माला, कुंडल गले माला ।
तेरे नैना बने हैं बिसाला ॥

राधेरानी, तेरे संग बिरज की सखियाँ, बिरज की सखियाँ ।
मोरी लागी हैं नि मानी अखियाँ ॥
मोहन तू 'चन्द्रसखी' को प्यारौ, सखी कौ प्यारौ ।
तू है नन्द जू कौ राजदुलारौ ॥

**कैसे लौटूँ रे बिहारी नंदलाला ।**
प्रात होत गऊन के पाछै रामा, संग लिये गोपी ग्वाला ।
मोर मुकट पीताम्बर सोहै रामा, गल सोहै फूलन माला ।
जमुना की रेती में रास रच्यौ है, मगन भये गोपी ग्वाला ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन में चित लागा॥

**मेरी उरझी लट सुरझाय जइयो, मोहन ! मेरे कर मेंहदी रची है ।**
सिर की साड़ी सरक गई है, अपने ही हाथ उढ़ाय जइयो ॥
माथे की बिंदिया गिर जो पड़ी है, अपने ही हाथ लगाय जइयो ।
हाहा खाऊँ, तेरे पैयाँ परत हूँ, बीरी तनक खवाय जइयो ॥
कंगन कीलें गिर जो पड़ी हैं, अपने ही हाथ लगाय जइयो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरण चित लाय जइयो ॥

**तेरौ मुख नीकौ कि मेरौ राधा प्यारी ।**

दरपन हाथ लियौ नंदनंदन, साँची कहो वृषभान दुलारी ॥
हम कहा कहैं तुम ही क्यों न देखो, मैं गोरी तुम श्याम बिहारी ।
हमरौ बदन ज्यों चन्दा की उजियारी, तुमरौ बदन जैसे निसि अँधियारी ॥
तुमरे सीस पर मुकुट विराजै, हमरे सीस पर तुम गिरधारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, दोऊ ओर प्रीत बढ़ी अति भारी ॥

**दोऊ मिल करत प्रेम की बतियाँ ।**

काहे कौ पलंग, काहे की पाटी रामा,
काहे की बान बुनावै राधेरानी जी कौ रसिया ।
सोंने कौ पलंग, रूपे की है पाटी रामा,
रेशम बान बुनावै राधेरानी जू कौ रसिया ॥
काहे कौ दिवल, काहे की बाती रामा,
काहे कौ घृत जलावै राधेरानी जू कौ रसिया ।
सोने कौ दिवल, कपूर की बाती रामा,
प्रेम कौ घृत जलावै राधेरानी जू कौ रसिया ॥
काहे की सौर, काहे कौ गद्दा रामा,
काहे कौ तकिया लगावै राधेरानी जू कौ रसिया ।
रेशम की सौड, फूलन कौ गद्दा रामा,
फूलन कौ तकिया लगावै राधेरानी जू कौ रसिया ॥
काहे की चौपड़, काहे के पाँसे रामा,

काहे की बाजी लगावे राधे रानी जू कौ रसिया ।
सत्य की चौपड़ धर्म के पाँसे रामा,
प्रेम की बाजी लगावै राधे रानी जू कौ रसिया ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि,
नेह ते नेह लगावै राधे रानी जू कौ रसिया ॥

**तेरी साँवरी सूरत मन बसिया ।**
**हो जी, आज यहीं रहो राम रसिया ॥**
अब हरि मैंने आवत देखे, झटपट खोल दई टटिया ।
चन्दन चौकी कौ बैठन देऊँगी, चरण पखारे सब सखियाँ ।
तातौ पानी, सियरौ उबटनौ, उबट न्हवावै सब सखियाँ ।
पाट पटम्बर और पीताम्बर, बस्तर पहरावै सब सखियाँ ।
घिस घिस चंदन भरी है कटोरी, खौर लगावैं सब सखियाँ ।
हार पैन्हावै सब सखियाँ ।
दूध दुहायौ और सिरायौ, चाँवर राधूँ भर पतियाँ ।
बूरौ डारूँ भर पसियाँ ।
छप्पन भोग छत्तीसौं व्यंजन, थार परोसैं सब सखियाँ ।
भोग लगावैं सब सखियाँ ।
सोंने की झारी गंगाजल पानी, बीरियाँ चबवावैं सब सखियाँ ।
चुन-चुन कलियन सेज बिछाई, चरन पलोटैं सब सखियाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन की मैं दसियाँ ॥

श्री राधा

**बीड़ी बनावै राधा प्यारी, श्याम कौं खड़ी ।**
पान बीड़ी कत्था व चूना सुपाड़ी, इलायची पड़ी ।
बीड़ी है नागर पान की यह थार में धरी ।
कंचन कौ थार हाथ में राधा लियें खड़ी ।
बीड़ी दई मोहन कौं, हरि ने प्रेम सौं लई ।
मोहन ने बीड़ी चाबी, राधा देखत रही ।
होठौं की लाली क्या कहूँ, कछु जात न कही ।
गोरे बदन हैं राधिका, प्रभु साँवरे सही ।
जैसे बादल में बिजरी, उपमा जात न कही ।
राधा करै श्रृंगार, प्रभु मुरली धरी ।
'चन्द्रसखी' जोड़ी तौ राधेश्याम की बनी ॥

## होली-लीला

**गुवालिन गोकुल की, थाँरे लारे लग्या आवे नंदलाल ।**
वेगी दौड़ डगर कूँ ले ले, तो पै डारे प्रेम को जाल ॥
हाथ में लाल गुलाल फेंककर, डारे हाल बिहाल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, थारो चिरजीवो नंदलाल ॥

**ककरेजी तेरो चीर कहाँ भीज्यौ ।**
तू कहै मैं पाणी हो भरन गई, हम तो कहैं नंद कौ रीझ्यो ॥
फागुण मास लाज अब कैसी, फिर याको बदलो लीज्यो ॥
चतुर श्याम से फगुआ लेके, अँखियन भर मन चावो कीज्यो ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, दासी जाँण दरसण दीज्यौ ॥

**मत मारो पिचकारी, मैं तो भीज गई सारी ।**
जो मारो तो सनमुख मारो, ना तर दूँगी मैं गारी ॥
सास बुरी मेरी ननद हटीली, पिया देवै छै गारी ।
चोवा चंदन अतर अरगजा, केसर की पिचकारी ॥
चोली को रंग फीकौ पर गयौ, लँहगो हो गयौ भारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारी ॥

**वृन्दावन आज मची होरी ।**
खेलत स्यामा स्याम सखी री, मृगमद बट केसर घोरी ॥
बरस रहे चहुँ ओर कुमकुमा, अबीर गुलाल भरि झोरी ।
सखियन सुन धुधकार डफन को, ज्यौं की त्यौं गृह तज दौरी ॥
सखियन लियौ घेर श्याम कूँ, अब देखैं प्रभुता तौरी ।
मोहनी रूप दिखाय सखिन कूँ, दृगन गुलाल लाल छोरी ॥
उर उमगत, बोलत प्रेमातुर, निरदई श्याम अखियाँ फोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मुआफ कियौ अपराधी को री ॥

**कान्हा धरे रे मुकट खेलें होरी ।**
इत श्याम लई पिचकारी रंगभर, उत श्यामा केसर घोरी ॥
हाथन लाल गुलाल फैंटभर, मारत हैं भर भर झोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, तेरे बदन कमल पर चित चोरी ॥

# श्री राधा

**कान्हा धरे रे मुकट खेलें होरी ।**

इत ते आये कुँवर कन्हैया, उत ते राधा गोरी ॥
कितने बरस के कुँवर कन्हैया, कितने की राधा गोरी ।
बारह बरस के कुँवर कन्हैया, सात बरस की राधा गोरी ॥
हिलमिल फाग परस्पर खेलत, अबीर गुलाल भर झोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, जुगल चरन पै चित चोरी ॥

**रंग रसिया खेलै फाग, सखी मोरे अँगना में ।**

लाल गुलाल के बादर छाये, रंग की परत फुआर ॥
सारी चूँदर मोरी रंग में भिजोंई, आप वचाई छैला पाग ।
मोपै तो रंग हँस-हँस डारै, आप जाय छैला भाग ॥
और कोई मोरे दाव न आवै, साँवरे से क्यों रंग लाग ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, सब सखियाँ म्हारी भाग ॥

**चलौ गुइयाँ आज खेलैं होरी । कन्हैया संग खेलैं हम होरी ॥**

एक से एक जोबन मदमाती, काहू की उमरिया थोरी ।
सब सखियाँ हिलमिल कर आईं, भर-भर रंग की झोरी ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलीन में, मिल गये नंद किसोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरजीवी रहो यह जोरी ॥

# श्री राधा

**कैसी होरी मचाई, श्याम चिड़ चोरी लगाई ।**
इतते आई कुँवर राधिका, उतते कुँवर कन्हाई ।
हिलमिल फाग परस्पर खेलत, सोभा बरनि न जाई ।
खेलत गेंद गिरी जमुना में, हमसे कहत चुराई ।
बहियाँ पकर मोरी अँगियाँ में खोजत, एक गई दो पाई ।
उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, चहुँ दिस रंग मचाई ।
हिलमिल करत बिनोद सखिन संग, केसर कीच मचाई ।
पकड़ौ री पकड़ौ श्यामसुन्दर कौं, यूँ कहि सखियाँ आईं ।
छीन लिये मुरली पीताम्बर, सिर पर चुनरी उढ़ाई ।
कहाँ गये तेरे संग के सखा सब, कहाँ गये बल भाई ।
कहाँ गई तेरी मात यशोदा, तुमको लेय छुड़ाई ।
फगुआ लिये बिन जान न देंगी, तुम चित चोर कन्हाई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरनकमल बलि जाई ॥

**रसिया बन्यौ मदनमोहन प्यारे ॥**
फैंट गुलाल हाथ पिचकारी, जुवती जन मोहन वारे ।
पीताम्बर की कछनी काछै, क्रीट मुकट कुंडल वारे ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, बीन उपंग चंग न्यारे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, तन मन धन तोपै वारे ॥

श्री राधा

**मैं जमुना न जाऊँ राधे, मचि रहौ ख्याल री ॥**

हम जमुना जल भरन जात हैं, ओढ़ै अपनौ साल री ।
हम हूँ सों आगे जावै, नन्द जी कौ लाल री ।
हाथ में पिचकारी सोहे, फैंट में गुलाल री ।
तुम देखौ सखियाँ, नन्द कौ आवै अटपटी चाल री ।
तान तौ मृदंग बाजै, और बाजै खटताल री ।
हौलें हौलै बंसी बाजै, मदन गुपाल री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि की बलिहार री ।
कालीदह में रास रच्यौ है, मदन गुपाल री ॥

**कन्हैया ने घेर लई कुञ्जन में, मोरी सखियाँ आज नहीं संग में ।**

आयौ फागुन फिरत दुहाई, श्याम फिरत माधौवन में ।
ढूँढत फिरत अकेली पावै, कैसे निकसूँ फागुन में ।
मैं दधि बेचन जात वृन्दावन, आन फँसी वाके फंदन में ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, चित लाग्यौ चरनन में ॥

**कन्हैया ने हमसे मचाई होरी, क्या बिरज में नार थोरी ।**

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, लेत तान चित चोरी ।
अबीर गुलाल के बादल छाये, मृगमद केसर घोरी ।
अँगुली पकरि मेरौ पहुँचौ पकड़्यौ, बहियाँ पकरि झकझोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हमरी समझ भई भोरी ॥

**साँवरौ होली खेलन जानैं । आई रुत पर घर मानै ॥**
वन से आयके धूम मचावै, भली बुरी नहिं जानै ।
गोरस के मिस सो रस चाखै, अंग से अंग लिपटावै ।
दरद मन में नहिं मानै ॥ साँवरौ होली ...
हाथ अबीर गुलाल फैंट में, भर पिचकारी तानै ।
होरी कौ खिलैया मोरे द्वार ठाड़ौ, भोरहि आन जगानै ।
शंक मन में नहिं आनै ॥ साँवरौ होली ...
नंद कौ नंदन कुँवर लाढ़लौ, सौ मेरे मन की जानै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, अरज करूँ प्रभु थानै ।
प्रेम वक्साओ म्हानै ॥ साँवरौ होली...

**डगर मोरी छाँड़ौ श्याम, बिधि जावोगे नैनन में ।**
भूल जावोगे सब चतुराई लाला, मारूँगी सैनन में ।
जो तेरे मन में होरी खेलन की, तो ले चल कुञ्जन में ।
चौवा चंदन और अरगजा, छिड़कूँगी फागुन में ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, लागी तन मन में ॥

**साँवरौ होरी में म्हारे लग जाएगी रे मत मारै दृगन की चोट ।**
पहिली चोट बचाय गई हूँ कर घूँघट की ओट ॥
दूजी चोट दई नैनन में, मैं तो होय गई लोटापोट ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मैं तो लूँगी फागुन की गोट ॥

**मोरी अँखियाँ गुलाबी कर डारी रसिया ।**

हाथ अबीर गुलाल फेंट में, दोय मुठी भर मारी रे रसिया ।
अँगिया मोरी फाड़ी बहियाँ मरोड़ी, पिचकारी भर मारी रे रसिया ।
मोतियन माँग भरी बिखरी मोरी, सास सुनेगी देगी गारी रे रसिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल बलिहारी रसिया ॥

**आज बिरज में होरी रे रसिया ।**

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, और नगारे की जोरी रे रसिया ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, केसर रंग झकझोरी रे रसिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरजीवो ये जोरी रे रसिया ॥

**रुक्मणी जी के मन में बस गये स्याम ।**

कारी घटा स्याम कर मानै, नित उठ करै प्रनाम ॥
स्याम बरन सिंगार बनावै, पूजै सालिगराम ।
मन की माला फेरे रुक्मणी, भजन लगी है हरिनाम ॥
नाना भाँति बनाये मन्दिर, और तुलसी अस्थान ।
अन्न खाय न पानी पीवै, जमी पै करै बिश्राम ॥
तुलसीदल ऊपर गंगाजल, भोजन कौ का काम ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, गावै सीताराम ॥

# श्री राधा

**सुदामा कहै भामिन तें, मोय मत पठिवै री हरि के पास ॥**
फाटी पाग और जामा फाटौ, बिन पनही के पाँय ।
बहुत दिनन के बिछुडे मितर, पहिचानेंगे नाँय ॥ सुदामा...
मुट्ठी तन्दुल लिए मँगाई, उनने लिए गाँठ बँधवाय ।
हरि से मिलन सुदामा चाले, हरि के द्वार पुकारे जाय ।
हरि ने अपने दूत पठाये, मितर लिए बुलाय ।
चन्दन चौकी डार दई है, बैठे हैं कंठ लगाय ॥ सुदामा...
तीन लोक दीने ठाकुर ने, और दियौ पाताल ।
मृत्यु लोक की सुरत सँभारी, रुक्मिनि पकरौ है हाथ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन बलिहार ।
सुदामा कहै भामिन ते, मोहि मत पठवै री हरि के पास ॥

## श्रीमान-लीला

**मान तू गुमान भरी है री राधा, थोडी कर मान ।**
लाल बुलावत तू नहिं आवत, ये तो मैं बान बुरी है री राधा ।
चार पहर तोहै झगडत बीती, तू नहीं मनी तेरी छाया ढली री राधा ।
ये तोकौ रिझावन आयौ, अब तौ मान अब ढील न होगी री राधा ।
'चन्द्रसखी' गिरधर के चरण सूँ, लिपटी रहियौ री राधा ॥

# श्री राधा

**मान तजि चल राधा, यदुनंदा बुलावै री ।**
छोड़ दै छबीली हठ, छोड़ दै हठीली हठ ।
तेरे बिन देखैं कान्हा पान न चबावै री ।
मुरलीधर मुरली में टेरे राधे, तेरौ ही जस गावै री ।
जो तुम मेरे संग न चलौगी राधे, वह तौ आप ही आवै री ।
व्याकुल रहत तोहि बिन देखैं, राधे, क्यों जियरा तरसावै री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, राधे! वह तौ नेह लगावै री ॥

## शयन-लीला

**चलौ री सखी, सौ गए नन्द किशोर ।**
रतन जटित को पलँग मनोहर, याकी छवि अति घोर ।
राधा पौढ़ैं, कृष्ण पौढ़ावैं, रस बस कियौ मन घोर ।
कृष्ण साँवरे के दरसन करिये, आयेगौ बड़ी भोर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन मेरी डोर ।

**श्याम जगावै आधी रतियाँ, मैं सोय गई ।**
स्याम जगावै मेरी बहियाँ पकड़कैं, झुक-झुक आवैं मेरी अँखियाँ । मैं सोय...
चटक बदरिया एकहू न आई, बूँद परै मेरी छतियाँ । मैं सोय...
चूँदर भीजै मेरौ अंग पसीजै, भर-भर आवै मेरी छतियाँ । मैं सोय...
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुमसे लागी मेरी अँखियाँ । मैं सोय...

**सोवत राधा प्यारी, श्याम ने जगाई है ।**
**श्याम ने जगाई है, राधा उठ आई है ।**
**मीड़त आँख राधे, लेत जम्हाई है ॥**
बाहैं बाजूबन्द सोहैं, हाथ सोहैं कँगना;
गल बीच हार सोहैं, गोदी सोहैं ललना;
कंधा पर धोती लीनी, हाथन में लोटी लीनी;
ओंघा की दातुन तोड़ी, राधा मुसक्याई है ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि,
होत सवेरा राधे जमुना नहावैं जाई है ॥

**सोवत राधा प्यारी, कृष्ण ने जगाइये ॥**
कृष्ण ने जगाई, राधे ! उठि आइये ।
मीड़त आँख राधा, लेत जम्हाइये ॥ सोवत...
बगल में धोती लिये, हाथ में लोटा लीये
ओंघा की दाँतुन तोड़ी, राधा मुसकाईये ॥ सोवत...
गल में तो हार सोहै, बाँहि सोहै बाजूबन्द ।
हाथ में तो खड़ुआ सोहैं, प्यारी छवि छाइये ॥ सोवत...
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि,
सखियों के सँग राधे जमुना सिधाइये ॥ सोवत...

# श्री राधा

## वैद्य-लीला

**डस गयौ कालियो नाग, राधे जी की अँगुली में ।**
सात सखी मिल चली बाँग में, कर सोलै सिणगार ॥
ऐसो डंक दियो काली ने, पीलो पड़ गयो हाथ ।
नाड़ी वाकी ठीक नहीं है, कीजै कौन उपाय ॥
एक सखी पाणीड़ो ल्यावै, दूजी ढोलै वाय ।
तीजी सखी तो औषधि लावै, चौथी वैद्य बुलाय ॥
बरसाणे ते वैद्य बुलाया, बैठ्या पलँग पर आय ।
नाड़ी की तो कदर न जाणै, नैन से नैन मिलाय ॥
'चन्द्रसखी' मोहन कौ मिलवौ, मिलै ना बारंबार ।
नंदमहर को कुँवर कन्हैया, लै जायगौ संग लगाय ॥

**डस गयौ रे कालियो नाग, राधेजी की अँगुली में ।**
राधा झूलन चली बाग़ में, संग सहेली साथ ॥
ऐसौ डंक दियौ काली ने, पीलौ पड़ गयौ गात ।
एक सखी तो करे बिछोणाँ, दूजी ढोलै ब्यार ॥
तीजी सखी यूँ उठ बोली, लाओ न वैद्य बुलाय ।
नन्दगाँव से वैद्य बुलायौ, बैठ्यौ पलंग पै आय ॥
नाड़ी की तो कदर न जानै, नैन से नैन मिलाय ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन चित लाय ॥

**डस खायो जी भँवर कालो नाग, राधे थारी ऊँगलण में ॥**
राधे की मा राधे ने बरजे, तू बागण मत जाय ।
फूल बीणता खायौ नाग जी, नैण दिया कुम्हलाय ॥ राधे...
एक सखी तो पंखा डोलै, दूजी चँवर डुलाय ।
तीजोड़ियाँ वैद्य बुलावै, चौथेड़ी खावै पछाड़ ॥ राधे...
वृन्दावन में वैद्य बसत जे, तिनको लेउ बुलाय ।
लेके बंसरी झाड़ो देवै, सणक सणक जिवड़ो जाय ॥ राधे...
जंगल से बूटी मँगवाहू, राधे ने देऊँ जिवाय ।
जे थारी राधे चंगी होवै, ले जाऊँ संघ लिवाय ॥ राधे...
'चन्द्रसखी' मोहन सूँ मिलणा, लीला कही न जाय ।
यों कृसनजी मुरली वारौ, लारो लारो लियो जाय ॥

## कन्दुक-क्रीडा

**खेलन आयौ री, दुपहैरी में नंदलाल ॥**
चकई लेटुआ वे संग लाये, अरी, डोर री फिरावे सखी, नंदलाल ।
मैं रिसियाव रही मन अपने, अरे, दै तारी हँसे वे नंदलाल ॥
मैं पछिताय रही मन अपने, रूठ गये री सखी नंदलाल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, वारी वारी री बार बार नंदलाल ॥

श्री राधा

**अरी ए री ग्वालिन, मत गेंद री चुरावै ।**
अब तक गेंद परी मारग में, काहे कू दुबकावै ॥
एक गेंद की, दो लै लऊँगौ, जा गलियन में ग्वालिन फिर नहिं आवै,
तू तो कान्हा फिरै दिवानौ, झूँठ झार लगावै ।
कंस रजा ते जाय कहूँगी, कुनबा सहित तोय पकड़ बुलावै ॥
लाल लाल नैना कर ग्वालिन, काहे को डरपावै ।
कंस खसम कौ जोर दिखावै, ग्वालिन लै चों नाँय आवै,
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, बाँसुरी बजावै कान्हा मन मुसकावै ।

## नाग-लीला

**काली दह पै खेलन आयौ री, मेरौ वारौ सौ कन्हैया ॥**
काहे की जाने गेंद बनाई, काहे को डंडा लायौ री ।
पट रेशम की गेंद बनाई, चंदन डंडा लायौ री ॥
मार्‌यौ टोल गेंद गयी दह में, वो गेंद के संग ही धायौ री ।
नागिन री तू नाग जगाय दै, वो नाग नाथवे आयौ री ॥
नाग नाथ रेती में डार्‌यौ, फन-फन पै बैनु बजायौ री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, यह जीवन प्रान हमारौ री ॥

# श्री राधा

## चीरहरण-लीला

**अकेली मत जाओ राधे, जमुना के तीर ।**
राह वाट में चोर लागत हैं, सुन्दर श्याम सरीर ॥
तुम बेटी वृषभान दुलारी, वे हैं जाति अहीर ।
जब तुम जमुना न्हाहवे धसौगी, चौरैं तुम्हरे चीर ॥
लेकर चीर कदम चढ़ि बैठे, तुम तो जड़ोउ ठंडे नीर ।
माँगैं चीर, नहीं दे मोहन, ऐसे हैं बेपीर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरण अधीर ॥

**कान्हा बैठौ कदम की डारियाँ ।**
लै कैं चीर कदम चढ़ बैठे, हम जल माँहि उघारियाँ ॥
चीर हमारौ दे दै कान्हा, आवत लाज तिहारियाँ ।
चीर तुम्हारौ जब हम देंगे, हो जावो जल से न्यारियाँ ॥
जल से बाहर किस विधि आवें, तुम हो पुरुष हम नारियाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारियाँ ॥

**म्हाँरी थाँरी नाहिं बणें गिरधारी ।**
ले मेरो चीर कदम चढ़ि बैठो रे, हम जल माहिं उघारी ॥
तुमरो चीर राधे ! तमने देस्या जी, हो जावो जल से न्यारी ।
जल से न्यारी कान्हा ! किस विधि होवाँ आवत लाज तिहारी ॥
हमरी लाज क्यों राधे करत हो, हम हैं पुरुष तुम नारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारी ॥

## गोवर्धन-धारण

**ब्रज की तोय लाज मुकुट वारा ।**
तेरी रे बिरज पर इन्द्र कोप्यो, बरसत है मूसल धारा ।
चाँद सूरज दोऊ दीपन थरप्या, सँग थरप्या नव लख तारा ॥
सात समुंदर पिरथी थरपी, अड़सठ तीरथ हैं न्यारा ॥
ग्वालबाल सब किया इकट्ठा, गोवर्धन नख पर धारा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि जीते इन्द्र हारा ॥

**कारी कामर वारौ री मेरौ लाला कारी कामर वारौ री ।**
सात बरस के साँमलिया ने, गिरवर धारौ री ।
मात यशोदा यों कहे, मेरौ लाला वारौ री ॥
मोहन मुरली वारौ री जसुमत नंदुलारौ री ।
इन्द्र चढ़्यौ घनघोर कैं, कर दियौ घोर अँधियारौ री ।
मुरली वारे लाला ने, याकौ गरब निकारौ री ॥
'चन्द्रसखी' की वीनती, या पै तन मन वारौ री ॥

**गिर न पड़े गोपाल, गिरवर गिर न पड़े गोपाल ।**
ब्रज की सखी सब पूजन निकसी, भर-भर मोतियन थार ।
इन्द्र-कोप चढ़्यौ ब्रज ऊपर, बरसत मूसलधार ।
सात दिवस मघवा झर लायौ, ब्रज में पड़ी न फुआर ।
संख चक्र गदा पद्म विराजै, नख पर गिरवर धार ।
ग्वालबाल सब गिरवर नीचे, मुरली बजावें नन्दलाल ।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, तिलक विराजै भाल ।
पीताम्बर की कछनी काछैं, बाँके नयन बिसाल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, निरखत मुख नंदलाल ॥

## वंशी-वीणा-वादन

**भोर ही बाजी री मुरलिया, कैसे धरूँ जिया धीर ।**
गोकुल बाजी, वृन्दावन बाजी, बाजी-बाजी जमुना के तीर ।
मैं जल जमुना भरन जात ही, भरन न दै मोहै नीर ॥
बैठ कदम पर बंसी बजाई रे, बँसरी कौ लाग्यौ मोरे तीर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, आखर जात अहीर ॥

**बंसी जमुना पै बाज रही रे लाल ।**
छवि निरखत कैसे जाऊँ री आज । बंसी जमुना...।
बंसी की टेर सुनी मेरे श्रवनन, तन मन सुध बिसरी रे लाल ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, चंदन खौर लगी रे लाल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनन चेरी भई रे लाल ॥

**देखि सखी री मेरौ मन मोह्यौ,**
**फिर बाजी वह हरि की बँसुरिया ।**
बाँस कटाऊँ वृन्दावन के,
उपजै न बाँस, बजै न बँसुरिया ।
एक तो जरावै मोय नन्द जी कौ लाला,
दूजै जरावै बैरिन सौत कुँवरिया ।
तन जारै जैसे बन की लकड़िया,
केस जरे जैसे घास की तरियाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि,
हरि के चरण मेरी लगी है सुरतिया ।

**चलो सखी वृन्दावन चलिये, मोहन बेनु बजावै री ॥**
बेनु सुनत शिव शंकर मोहे, ध्यान धरत नहीं पावै री ॥
बेनु सुनत ब्रह्मादिक मोहे, वेद पढ़न नहीं पाये री ॥
बेनु सुनत गौ बछरा मोहे, दूध पियन नहीं पाये री ॥
बेनु सुनत सब गोपीन मोही, झुंड-झुंड उठ धावै री ॥
बेनु सुनत खग पंछी मोहे, चुगा चुगन नहीं पाये री ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि चरनन चित लाये री ॥

**बंसी की टेर सुनूँगी । सुनूँगी मैं तो बंसी की टेर सुनूँगी ।**
जो तुम मोहन एक कहोगे, एक की लाख कहूँगी । कहूँगी...
जो तुम मोहन साँची कहोगे, राधा बनि कै रहूँगी ॥ रहूँगी...
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, चरनों में लिपट रहूँगी ॥ रहूँगी...

**दो नैना में राधे बिलमाई ।**
बैठ कदम पर बंसी बजावै, सब सखियाँ मिल आईं ।
एक सखी उठ पायल पहरै, दूजी पहन न पाई ॥
एक सखी उठ अंजन सारै, दूजी सार न पाई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन चितलाई ॥

**जमुना के तीर कान्हा बंसी बजाओ थोड़ी धीरे-धीरे ॥**
जमुना के किनारे बाजी बंसरी, एरी मोहे पशु पंछी नाग तीरे-तीरे ।
बंसरी की टेर या जियरा लुभावत, पथरा सुनत वहन लागे धीरे-धीरे ।
सुन-सुन कै सखी धावति, घर के काम काज छाँड़ि चली सीरे-सीरे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मोहन तन वसत वेष पीरे-पीरे ॥

**गावत श्याम सखिन संग गोरी ।**
जमुना किनारे बंसी बजाई, तान सुनत ग्वालिन भई बौरी ।
सब गोपी घर-घर से निकसीं, संग चली वृषभान किशोरी ।
सूरत देख श्याम सुधि भूलीं, खड़ी रही दोऊ कर जोरी ।
पूछत श्याम कहाँ तुम आईं, लोकलाज कुल की सब बोरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरि के चरन में लग रही डोरी ॥

**कैसी बंसी बजाई बलवीर ।**
श्रवन सुनत सुधि रही न तन की, जियरा धरत न धीर ।
गोकुल बाजि वृन्दावन बाजी, तट जमुना के तीर ॥
बरज रही बरजौ नहीं मानैं, आखर जात अहीर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, थिर बहै जमुना नीर ॥

**बंसी बजाई साँवरे मैं सुध-बुध भूली रे ।**
साँवरिया मोहन आज, बंसी कामण गारी रे ॥
घोल भरोसे चौक में, मैं दहीज ढार्‌यो रे ।
रई भरोसे मूसल सों, मैं आन घमाड़्यौ रे ॥
दूध भरोसे नीर में, मैं जाँवण दीन्हो रे ।
नीर भरोसे दूध सूँ, मैं स्नान कीनौं रे ॥
बालक भरोसे बछिया, मैं गोद रमायो रे ।
बछिये भरोसे बालक ने, मैं खूँटे बाँध्यो रे ॥
पगाँ भरोसे पायल नें, मैं हाथाँ पहरी रे ।
नाक भरोसे नाथली, मैं कानाँ पहरी रे ॥
साँवरिया गिरधारी, म्हारी कुंज पधारो रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तन-मन वारो रे ॥

**देखो री बाँसरी में कान्हो राधे-राधे गावै री ।**
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में कान्हो रास रचावै री ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कानन में कुंडल झलकावै री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चित वाँरे चरणाँ जावै री ॥

**दधि दूँगी रे साँवरिया प्यारे, वीणा बजाय ।**
ऐसी रे बजाय, जैसी वनखण्ड सुने रे, चरती गाय मगन होय जाय ।
ऐसी रे बजाय जैसी जमुना पै सुने रे, बहतो नीर तुरत थम जाय ।
ऐसी रे बजाय, जैसी मेरे मन भावै रे, संग री सहेलड़ी मगन होय जाय ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणाँ चित दियौ है लगाय ॥

**तैं मेरो मन मोह्यो बंसी वाला, मधुरी वीणा बजाय कैं ।**
सामन मास बाँस को बिडलो, सींच्यो है मन चित लाय कैं ।
अब तो बैरिन भई है बाँसुरी, मोहन के मुख आय कैं ।
मैं जल जमुना भरन जाय रही, मारग रोक्यो आय कैं ।
संग की सहेली मेरी क्या तो कहेगी, सास ननद से जाय कैं ।
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, मधुरी-सी वीणा बजाय कैं ।
जा बंसी में साँवरौ अचरज गावै, राधा को नाँव सुनाय कैं ।
मोर मुकुट कानों बिच कुंडल, तुर्रे तार लगाय कैं ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणाँ चित लाय कैं ॥

## श्रीकृष्णासक्ति

**मदन मोहन जी सूँ लगन लगी है, तन मन डारूँ वारी ।**
करुना सिन्धु जगत के बन्धु, सन्तन के हितकारी ॥
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी ।
गल सोहै बैजंती माला, निरखत राधा प्यारी ॥
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, ओढ़ै कमरिया कारी ।
बैठ पताल कालिनाग नाथ्यौ, फन पै नाचे गिरधारी ॥
इन्द्र चढ़्यौ कोप ब्रज ऊपर, नख पर गिरवरधारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल की बलिहारी ॥

**कैसे कटे दिन रात मोहन ।**
राधे याद करै मोहन की, गिरी है मूर्छा खाय ।
सीस मुकुट मकराकृत कुंडल, साँवरि सुरतियाँ दिखाय ।
मोहन के मुख पान, नैनन में सुरमा, तिरछी नजरिया दिखाय ।
पीत वसन वैजंती माला, पटका की चटक दिखाय ।
कोमल चरण चन्दन के खड़ाऊँ, चाल की मरोर दिखाय ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, बंसी की तान सुनाय ॥

**मन लाग्यौ री श्याम विलासी सौं ।**
भोर भयें निस बीत गयी सब, रविकर किरन प्रकासी सौं ॥
पंछी जागे बोलन लागे, दरसन भये अविनासी सौं ।
जुगल छबीले छवि पर बलि गई, 'चन्द्रसखी' सी दासी सौं ॥

**डगर बताय जा, मोय गैल बताव रे ।**

भूल जो परी है निरजन वन में, ऊजड़ पड़्यौ है ये ठाँव रे ॥
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, साँझ परे घर आव रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनन में ध्यान लगाव रे ॥

**राधेश्याम मोरी रँग दो चुनरिया ।**

'ऐसौ जो रंग ना' रंग नाहिं छूटै हो, धोबी धोवै सारी उमरिया ॥
नाँहि रँगो तो बैठी रहूँगी हो, बैठे बिताऊँ अपनी सारी उमरिया ।
नाँहि रँगो तो मोल मँगाय दो, ब्रज में लगी है प्रेम बजरिया ॥
चूनरी पहन मैं जमुना गई हो, कृष्ण की लगी है मोहे नजरिया ।
तू मत जाने राधा अकेली हो, सात सहेली मोरे साथ रे रसिया ॥
तू मत जाने राधा कुँवारी हो, कृष्ण कन्हैया मेरौ वर रे साँवरिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि हो, हँस-हँस लेऊँ तोरी बलैय्या ॥

**श्रीकृष्ण मेरी गलियों में आया करो ।**

मोरमुकुट गले फूलों की माला, साँवरी सुरतिया दिखाया करो ।
ये अँखियाँ दरसन की प्यासीं, इनको न तरसाया करो ।
दिन नहीं चैन, रैन नहीं निंदिया, सपने में दरस दिखाया करो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, दासी को न बिसराया करो ॥

# श्री राधा

**भले से गिरधारी ! हमारे घर अइय्यो ।**
सास हटीली नंद छबीली, चोरी चोरी अइय्यो ॥
मोरे पिछवाड़े धरी नसेनी, सहजई चढ़ि अइय्यो ।
मोरे अँगना में कुआ खुदौ है, वा में बैठ न्हइय्यो ॥
मलियागिर चन्दन मँगवावै, घिस-घिस अंग लगइय्यो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कदम पै बैठ रहिय्यो ॥

**वारी श्याम बलिहारियाँ, कभी आवो न गलियाँ हमारियाँ ।**
आशा लग रही है मोरे मन में, तक रही बाट तुम्हारियाँ ॥
कौन सखी ने प्यारे तुम बिरमाये, हम से अधिक कौन प्यारियाँ ।
ललिता सखी ने प्यारी हम बिरमाये, तुम से अधिक सोई प्यारियाँ ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलीन में, रहस-रहस जस गाइयाँ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित लाइयाँ ॥

**मेरौ मन हर लीनौ राजा रणछोड़ ।**
आसपास रत्नाकर सागर, गोमती करत किलोल ।
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर ॥
वृन्दावन में रास रच्यौ है, नाचत नंद किशोर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरनकमल चितचोर ॥

# श्री राधा

**कैसे आऊँ रे साँवरिया तेरी बृजनगरी ।**
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे जमुना गहरी ॥
पागी चलूँ तो म्हारी पायल भीजै, कूद परूँ भीजूँ सगरी ।
केसर कीच मच्यौ आँगन में, रपट गई राधा पगरी ॥
भर पिचकारी मुख पर डारी, भीज गई साड़ी पँचरंग री ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरजीवी रहे राधा लगरी ॥

**मन वृन्दावन चाल बसो रे । मान घटो, चाहे लोग हँसो रे ॥**
गुरु बिन ग्यान गंगा बिन तीरथ, एकादशी बिन वरत किसो रे ।
बिन दीपक के भवन किसो रे, बिना पुत्र परिवार किसो रे ।
मन न मिलै वासो मिलवौ किसो रे, प्रीत करै फिर पड़दो किसो रे ।
प्रीत के कारण कुटुम्ब तज्यो है, नंद कौ छबीलौ मेरे मन में बसो रे ।
'चन्द्रसखी' मोहन रँग राँची, ज्यों दीपक में तेज रस्यो रे ॥

**मेरे नैनन में रास-रस छाय रह्यौ री ॥**
जल बिच कमल, कमल बिच कलियाँ,
कलियों में भँवर लुभाय रह्यौ री ।
जल बिच सीप, सीप बिच मोती,
मोती में जोती समाय रह्यौ री ।
वन बिच बाग, बाग बिच बँगला,
बँगला में बालम बुलाय रह्यौ री ।
'चन्द्रसखी' मोहन बिन देखैं,
मेरौ जीव अकुलाय रह्यौ री ॥

**आज वृन्दावन रास रच्यौ है, मैं भी देखन जाऊँगी ।**
तातें सिंगार करूँ मोरी सजनी, मोतियन माँग भराऊँगी ।
ओढ़ कसूमल पचरँग लहँगो, मोहनलाल रिझाऊँगी ।
ताराबल तो तार बजावैं, मैं सुरवीणा बजाऊँगी ।
नरहरि नृत्य करै हरि आगे, भैरूँ राग सुनाऊँगी ।
ग्वाल होय गिरधारी आवै, मैं ग्वालिन बन जाऊँगी ।
मोहन दान मही कौ माँगे, कंस कौ जोर दिखाऊँगी ।
इसडो रास रचै मोरी सजनी, प्रेम मगन होय जाऊँगी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, ज्योति में ज्योति मिलाऊँगी ॥

**जानै रे कोऊ वैद न मन की ।**
जा तन लगै सोई तन जानै, अटपटी प्रीत लगन है कठिन की ॥
हीरै कौ सार सो हीराई जानै, सनमुख चोट सहै सिर घन की ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिंता है मोहै वा सुरगन की ॥

**डगर बताय दे, मैं तो साँवरे के जाऊँगी ॥**
पूडी कचौड़ी मोय कछूय न भावै, ठंडी बासी खाय कै आऊँगी ।
साँवरे के ताँई दहीय जमाऊँ, दही की मटकी मैं सिर पर लाऊँगी ।
साँवरे के ताँई फूल माला गूँथी, फूल माला लेकै डेरे ताँई आऊँगी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, बैठी-बैठी मैं हरि कौ गुन गाऊँगी ॥

# श्री राधा

**बता दे सखी साँवरे को डेरा किती दूर ।**
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना बहै भरपूर ॥
साँवरी-सी सूरत मोहनी मूरत, मुख पर बरसत नूर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हाजर रहत हजूर ॥

**जानें कब लेवै कूँ आवेगौ, वो कान्हा बंसी वारौ ॥**
अब चलिबे की करिय तैयारी,
माया ठगनी ने बात बिगारी,
अरे प्रेम ते कंठ लगावैगौ, वो कान्हा बंसी वारौ ।
गात देखि कै रोय रही हों,
जनम अकारथ खोय रही हों,
कब नैन ते नैन मिलावैगो, वो कान्हा बंसी वारौ ।
या ब्रज में कोऊ बसै न माई,
पानी में आग लगावैं लुगाई,
लोग कहत हैं बावरी आई,
'चन्द्रसखी' की यही दुहाई,
जानें दूल्है बन कैं आवैगो, वो कान्हा बंसी वारौ ॥

**गागरिया घर धरि आऊँ रे, कान्हा ! ठाड़ौ रहियौ कदम की छैयाँ ॥**
गागरिया घर धरि आऊँ, चूनरिया पलटि आऊँ,
करि आऊँ मैं सोलह सिंगारियाँ ॥ ठाड़ौ रहियो कदम...
बैठ कदम तरे बंसी बजइयो, यहाँ तो चरेंगी तेरी गैयाँ ।
ठाड़ौ रहियौ कान्हा दूर मत जइयो, तेरे मेरे बीच गुसैंया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन बलि जइयाँ ॥

## उद्‌बोधन

**चार बरन में सोई बड़ा, जिन राधा कृष्ण रटा ॥**
काये को जोड़त माल खजाना, काये को छावत ऊँची अटा ।
जब जम की तलवी आवेगी, छोड़ जाय सब लटा पटा ।
यह दम हीरा लाल अमोलक, पल पल में जाय घटा घटा ।
वहाँ से आया कोल करार कर, यहाँ फिरत तू नटा नटा ।
अपने कुटुम को ऐसे देखे, पलक उठाये पटा पटा ।
जब तेरा हंसा चला जात है, छोड़ जाय तू राज पटा ।
यह संसार मतलब का गरजी, बातें करता झूँठ मढ़ा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कानन कुंडल मुकुट जढ़ा ॥

**सब सखियन में राधे बड़ी हैं, गोपन में गोविन्दा ।**
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यौ, फन-फन निरत करंदा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम ब्रजजन के चन्दा ॥

**मुकुट पर वारी जाऊँ ओ नागर नंद ।**
सब पहाड़न में हिमाचल बड़ो है, सब तीरथन में गंग ।
सब देवन में सूरज बड़ौ है, सब तारेन में चंद ।
सब सखियन में राधा बड़ी हैं, सब ग्वालन में गोविन्द ।
'चन्द्रसखी' भज बाल की शोभा, हरि की सेवा में बड़ौ अनंद ॥

## वैराग्य

**करनी कर लै, हरि गुन गा लै, एक दिन धोखे में लुट जाय ।**
यह संसार रैन का सुपना, यहाँ नहीं कोई है अपना,
बन्दे तेरी झूँठी कल्पना, अगिन माँहि जरि जाय ॥ करनी...
माया में लिपट्यौ तू वंदा, अब तो चेत आँख के अंधा,
आवेगो जब जम कौ फंदा, हाथ पसारे जाय ॥ करनी...
जिस मालिक ने पैदा कीया, उसका नाम कभी ना लिया,
भूखे को भोजन नहीं दिया, अन्त समय पछिताय ॥ करनी..
तू जाने यह घर के मेरे, सिगरे बैरी बन जाँय तेरे,
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन चित लाय ॥ करनी ...

## परमरसमयी 'श्रीब्रजभूमि'

**बृज की रज हम क्यों न भई वीर ।**
पड़ी रहत गोकुल की डगर में, उड़ उड़ लागत श्याम शरीर ॥
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक दुर्लभ, स्रवन सुनत वंशीवट तीर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मिल गये मोहन मिट गई पीर ॥

**लागै वृन्दावन नीकौ आली, मोय लागे वृन्दावन नीकौ ।**
घर घर ठाकुर सेवा विराजै, दरसन गोविन्द जू कौ ।
रतन सिंहासन ठाकुर विराजैं, मुकुट धरैं तुलसी कौ ।
वंसीवट यमुना तट सुन्दर, सब ब्रज कौ है टीकौ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, सब जग लागत फीकौ ॥

**नीकौ लगै वृन्दावन, हमें तो बड़ौ नीको लगै ।**

घर घर में हैं तुलसी के बिरवा, दरसन गोविन्द जी कौ ॥ हमें तो बड़ौ...
निर्मल नीर बहत जमुना को, भोजन दूध दही कौ ।
रतन सिंहासन आप विराजें, मुकुट धर्‌यौ तुलसी कौ ॥ हमें तो बड़ौ...
कुञ्ज न कुञ्ज न फिरत राधिका, शब्द सुनत मुरली कौ ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, भजन बिना नर फीकौ ॥ हमें तो बड़ौ...

**ब्रजमंडल देस दिखावो रसिया ।**

ब्रजमंडल को आछो नीको पानी, गोरी-गोरी नारि सुघड़ रसिया ।
अगर चंदन रो ढोलियो बिराजे, अबल रेशमी कूंबे कसिया ।
बालापण में गऊएँ चराई, तिरग देसे चाल्यो बसिया ।
मुरली तोरी सदा ही सुहावो, मृगनैनी नाँचे रसिया ।
मटकी फोड़ी दही मेरो डार्‌यौ, बाँह पकड़ मेली घसिया ।
'चन्द्रसखी' अब आय मिले हैं, कृष्णमुरारी मेरे मन बसिया ॥

**ब्रजमंडल देस दिखाय रसिया ऽ ऽ ऽ ब्रजमंडल ।**

तेरी रे बिरज में गाय बहुत हैं, धौली-धौली गाय सुरंग बछिया ॥
तेरी रे बिरज में मोर बहुत हैं, बोलत मोर फटत छतिया ।
तेरी रे बिरज में नारि बहुत हैं, आछी आछी नारि मरद रसिया ॥
तेरी रे बिरज में चावल धोला, हरी-हरी मूँग उडद कचिया ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, नंदजी को लाल हिये बसिया ॥

## विरह-लीला

**म्हाँरो कोण गुन्हा तकसीर, कुंजन वन छोड़ी रे, माधो ।**
कै मैं होती जल की मछलियाँ,
हरि करते स्नान, चरण रज छूती रे, माधो ।
कै मैं होती बाँस की बाँसुरी,
मुख धरते नंदलाल, अधर रस पीती रे, माधो ।
कै मैं होती सीप कौ मोती,
हरि करते गल हार, हिवड़े पर रहती रे, माधो ।
कै मैं होती गऊ नंदघर,
चारत नंद किसोर, दरस नित पाती रे, माधो ।
कै मैं होती मोर की पँखिया,
'चन्द्रसखी' बलिहार, मुकुट पर रहती रे, माधो ॥

**माधो जी ने कैयाँ बिसाराँ जी ।**
गिरधारी गोपाल लाल ने, पल-पल चितवाँ जी ॥
मो मन रहै, कह्यौ ना मानै, कब कौ बैरी जी ।
मात खिजाई वृच्छ उपाड़ा, वो दिन सालै जी ॥
एक समय हरि गऊएँ चराई, जमुना के तीराँ जी ।
कालीदह में कूद पड़्या हरि, नाग जू नाथ्या जी ॥
सात बरस कौ भयौ साँवरो, गिरवर धार्‌यौ जी ।
इन्द्र कोप चढ़्यौ ब्रज ऊपर, पचि-पचि हार्‌यौ जी ॥
गोकुल ढूँढ वृन्दावन ढूँढ़्यौ, मथुरा हेर्‌यौ जी ।

एसी वेणु बजाई श्याम, म्हाँरो मन हर लीन्हो जी ॥
श्याम कठोर त्याग दई हमकूँ, गोपी टेरी जी ।
लै अकरूर गयौ मथुरा में, कब कौ बैरी जी ॥
एक बेर ल्यावो ऊधौ, म्हे पूछा मन की जी ।
'चन्द्रसखी' पर महर करो, चेरी चरणन की जी ॥

**साँची कह दो महाराज । बृज कब आवोला ।**
सरव सोवणी बनी रे द्वारिका, मथुरा की दिवि नाँय ।
जब हरि छोड़ो मथुरा नगरी, गोरस का रस नाँय ।
ग्वालबाल सब सखा जू मोहे, मोहे गोकुल गाँव ।
विरषभान की कुँवरी मोही, राधे उनका नाँव ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलीन में, भई चौमासी रैण ।
पहिले प्रीत करी हरि हमसों, पीछे लगे दुःख देन ।
हम मथुरा की गूजरी, तुम गोकुल के कान्ह ।
'चन्द्रसखी' मोहन को मिलणा, मिला न बारम्बार ॥

**ना जानूँ कद घर आसी, नणदी कौ बीर ।**
पंडित आयौ सुगण मनाऊँ, जियरा धरत न धीर ।
हमको छोड़ द्वारका धाये, कहा भई तकसीर ॥
दिन नहीं चैन रैन नहिं निदरा, उठत विरह की पीर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, आखर जात अहीर ॥

# श्री राधा

**इत आई बोले मोरा रे, मोरा श्याम बिना जिया डोला रे ।**
दादुर मोर पपीहा बोलैं, कोयल करत किलोला रे ॥
उतर दिसा ते आई बदरिया, चमकत है घनघोरा ।
रिमझिम रिमझिम मेहवला बरसै, आँगन मच रह्यौ सोरा रे ॥
राधा जू भीजैं रंग महल में, स्यालू की कोर किनोरा रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, स्याम मिला जिव सोरा रे ॥

**बंसीवाला हमारी गली आजा रे ।**
दिन नहीं चैन रात नहिं निदरा, सपने में दरस दिखा जा रे ।
तुम्हरी हवेली हमरौ वरू दो, नैना सों नैना मिला जा रे ।
मोरमुकुट कानन बिच कुंडल, आँगन बंसी बजा जा रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणों में ध्यान लगा जा रे ॥

**मेरौ मन लै गयो, बड़ी-बड़ी आँखन वारौ कारो हँस कैं ।**
भौंह कमान बाँण जाके लोगण, मेरे हिवड़े मारा कस कैं ।
रेजा-रेजा भयौ रे करेजा मेरौ, भीतर देख्यौ धँसकैं ।
जतन करो जंतर लिख ल्यावो, ओषद् ल्यावो धरकैं ।
रोम-रोम विष छाय रह्यौ है, कारे खायो डसकैं ।
जो कोई मोहन आन मिलावे, गले मिलूँगी हँसकैं ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, क्या री करूँ घर बसकैं ॥

# श्री राधा

**जा रे मोहन तोते प्रीत लगाई, समझ देख मन में पछताई ।**
जे मोहन थाने ऐसा जानती, पैलौ मचरकौ लेती लिखाई ॥
आँगण में वैर लेती लिखाई, बीच में लेती श्रीगंगाजी माई ।
थे हरत हरे अनवट बिछुवा, सरस चोली, चूँदरी रँगाई ॥
इतनो पहिर गई मोहन पै, जौवना की ऊँची अदा बताई ।
अपनी गरज के कारण साँवरा, बैयाँ पकर के मोहि लपटाई ॥
गरज निकस गई जब मोहन की, मुखड़े न बोल्यो मोसों अँखियाँ छिपाई ।
'चन्द्रसखी' ब्रजराज साँवरा, हरि के चरण मोकूँ लिपटाई ॥

**कोई कहियो रे मोहन आवण की ।**
आप तो जाय द्वारका छाये, हमको जोग पढ़ावन की ॥
आप न आवैं पतिया न भेजैं, बात करै ललचावण की ।
दोऊ नैण कह्यौ नहीं मानत, घट उमड़ रही सावन की ॥
दिल चाहत है उड़ जाय मिलूँ, पर पंख नहीं उड़ जावन की ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणकमल लपटावन की ॥

**ए री मैं खड़ी निहारूँ बाट ।**
चितवन चोट कलेजे वह गई, सुंदर स्याम सुघाट ॥
मथुरा में कर राखी कुबजा, बणिये की सी हाट ।
केसर चंदन लेपण कीन्हा, मोहन तिलक ललाट ॥
हमरी पलँग जड़ाऊँ छोड़्या, बणिया पीले पाट ।
क्याँ पर राजी भयौ साँवरौ, चेरी कैं नहिं खाट ॥

अजहूँ न आयौ कुँवर नंद कौ, क्याँ रे लाग्यौ चाट ।
छाँड़ गयौ मँझधार साँवरो, बिना अकल रो जाट ॥
तुमरे बिन गोपी ब्रज की सब, व्याकुल भईं विराट ।
'चन्द्रसखी' ने दरसण दीजौ, कीज्यो आनन्द ठाट ॥

**बोल-बोल म्हाँरा नन्दजी रा लाल, बोल्याँ सरसी रे । मोहन मुखड़े बोल ॥**
**बोल-बोल म्हाँरा जनम सुधारण, बोल्याँ सरसी रे । साँवरा मुखड़े बोल ॥**
मोरमुकुट पीताम्बर प्रभुजी मुख पर मुरली सोहै रे ।
बला बंसुरी तीन लोक में, सबकौ मनुआ मोहै रे । मोहन मुखड़े बोल ॥
आप तो जाय द्वारका छाये, हमकों जोग पढ़ायौ रे ।
आप न आये पतियाँ न भेजी, कूण मिलायौ रे । साँवरा मुखड़ा खोल ॥
सोलह सहस्त्र तो गोपियाँ त्यागीं, कुबजा सूँ नेह लगायो रे ।
'चन्द्रसखी' ललिता यूँ भाखै, हरि नहीं आयौ रे । मोहन मुखड़े बोल ॥

**परसूँ जो पिया आवण कहि गये, कद आवैगी वैरण परसूँ ।**
जिय चाहत है, उड़ जाय मिलूँ, मोसें उड़्यौ न जाय बिना परसूँ ॥
घनश्याम नहीं बरसा ऋतु आई, दुःख देत पपीहा ऊपर सूँ ।
घन गरजै बिजली चमकै, मेंह कहे बरसूँ-बरसूँ ॥
कोई आज कहै कोई काल कहै, कोई आप कहै परसूँ-परसूँ ।
'चन्द्रसखी' पर कृपा कीज्यौ, विनती कहियौ श्रीहरि सूँ ॥

**लिख भेजूँ सन्देशौ, आवौ म्हाराँ बलमाँ रे देस ।**
लिखूँ री पतियाँ भेजूँ री बतियाँ, कागद काली रेख ॥
चम्पा फूल्यो मरुवो फूल्यो, फूल रह्यौ चहुँ देस ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, साँवरिया अवधेस ॥

**पाती सखी माधौ जी की आई ।**
आप न आये श्याम मनोहर, ऊधव हाथ पठाई ॥
बिन दरसण व्याकुल भयौ जिवड़ो, नैनन नीर बहाई ।
मन सकुचाय ओट घूँघट की, पतियाँ छतियाँ लगाई ॥
कपट की प्रीत करी मनमोहन, मोरी सुध बिसराई ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, दरसन बिन अकुलाई ॥

**साँवरिया ने कहज्यो समुझाय, उद्धव जी सुणजो म्हाँरी बात ॥**
जनम भयौ मथुरा तजी, ए जी प्रभु ! पाछै लीयौ उत वास ।
ग्वाल बाल सब गोपिन, ए जी प्रभु ! नित प्रति रहत उदास ॥
जमुना तो जल उमग नहीं, ए जी प्रभु ! कुंज रहे कुमलाय ।
'चन्द्रसखी' की वीनती ए जी प्रभु! तन की तपन बुझाय ॥

**वो दिन क्यूँ नहीं चितारो ? वो दिन क्यों ?**
कुबजा राजा कंस घर दासी, नित उठ देती वारो ।
हाथ कटोरो, चन्दन को मुठियो, घसती रो गयौ जमारो ॥
वन रा वन में चुगती लकड़ियाँ, चुग-चुग करती भारो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, आखिर श्याम हमारो ॥

**कुछ दोष नहीं कुबजा ने, वीर आपणों श्याम खोटो ।**
आप न आवै पतियाँ न भेजै, कागज रो काँई टोटो ॥
विष री बेल के विष फल लगौं, काँई छोटो काँई मोटो ।
जमुना के नीरे तीरे धेणु रे चरावै, हाथ चंदण रो सोटो ॥
कुबजा चेरी कंसराय की, वो छै नंद जी रो ढोटो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कुबजा बड़ी हरि छोटो ॥

**ऊधौ वेग्याँ जाज्यो जी,**
**कहज्यो म्हाँरे साँवरा ने, महलाँ आज्यो जी ।**
कब का गया म्हारी सुध ना लई ।
चादणी सी रात, म्हाँरी वैरण भई ॥
साँवण मास सुहावणाँ, बागाँ कोयलिया बोले ।
पापी रे पपीहा, मेरो प्राणक छोलै ॥
कोयल वचण सुहावनाँ, बोलै अमरित वैण ।
कहो काली कैसे भई, (मोरे) रोय रोय गम गये नैण ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणाँ चित धाराँ जी ।
साँवरा बालम फेर मिलै, म्है तन-मन वाराँ जी ॥

**ऊधौ नंदलालजी सें, जय गोपाल कीज्यो रे ।**
हम कूँ तज दी जादराई, कूबरी वाके मन भाई ॥
हम तो सब जोगिण बन बैठी, अब तो राजी रीज्यो रे ।
हम तो लागें विष-सी खारी, कुबिजा लागे बहुत पियारी ॥
श्याम म्हारी प्रीत न जानी, दासी कूँ पती ज्यों रे ।
'चन्द्रसखी' चरणन की दासी, एक बार फिर आके दरसण दीज्यौ रे ॥

**अब रथ फेर मुरलिया वारे ॥**
चन्दा तड़फै सूरज तड़फै, तड़फ रहे अब नौ लख तारे ।
गैया तड़फै बछड़ा तड़फै, तड़फ रहे अब ग्वाल बिचारे ॥
गंगा तड़फै जमुना तड़फै, तड़फ रहे सब नदियाँ नारे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कब होंगे प्रभु दरस तिहारे ॥

**पलक न लागै, स्याम बिन पलक न लागै मेरी ।**
हरि बिन मथुरा एसी लगत है, चन्दा बिन रैन अँधेरी ।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बिच-बिच जमुना गहरी ॥
साँवरे की खातिर जोगिन हूँगी, घर-घर दूँगी फेरी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन की चेरी ॥

**ए री सखी, तैनें कहीं देखा रे, मेरा बंसी वाला ।**
वन-वन ढूँड फिरी मेरी सजनी, पैरन पड़ गये छाला ॥
तन-मन की सुधि भूली री भवन में, बैरिन बंसी ने जादू डाला ।
जब सों भनक परी मेरी श्रवनन, मोही सब ब्रजबाला ॥
दिन नहीं चैन, रैन नहिं निद्रा, ना जानूँ कैसा चेटक डाला ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, कब मिलिहैं नंदलाला ॥

**मोहन के कान लगी कुबड़ी ॥**
मेरे आँगन तुरसी कौ बिरवा, वामैं उपजी जहर कली ।
घोट घाटि कुबजा कों प्याई, पी-पी मस्त भई कुबड़ी ।
मस्त भई मोहन बस कीनै, वैरिन मेरी भई कुबड़ी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन लगी कुबड़ी ॥

**माधौ जी, वैरागिन मैं न भई ।**
लम्बे केस गेरुवा कपड़ा, तूँबी हाथ लई ॥
अंग भभूत बगल मृगछाला, माला हाथ लई ।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बही ॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, अध बिच भँवर भई ।
धरमी-धरमी पार उतर गये, पापिन डोब दई ॥
खेवा होय तो पार लगावै, ना तो जात बही ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि की सरन लई ॥

**माधौ जी, मैं न भई वन-मोर ।**
मोरा होती जमुना तट रहती, कुञ्ज में करती किलोल ॥
मोरा होती जंगल बिच रहती, नाँचत ही मुख मोड़ ।
उड़-उड़ पंख गिरें धरनी पै, बीनें ब्रज के लोग ॥
उन पंखन कौ मुकुट बनावें, पहरेंगे नंद किसोर ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चितचोर ॥

**ए री कुबजा ने जादू डारा, जिन मोह्या स्याम हमारा ।**
सोलह सहस गोपिका त्यागी, कुबजा संग सिधारा ॥
निर्मल जल जमुना कौ त्यागौ, जाय पियौ जल खारा ।
सीतल छाँह कदम की त्यागी, धूप सहै सिर भारा ॥
जादू कीन्हाँ टोंना कीन्हाँ, पढ़-पढ़ मंतर मारा ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, आखर स्याम हमारा ॥

**हम पर कुबजा सोक रची रे ॥**

हम कुलवंती नार छोड़ कें, दासी मनहिं जची रे ।
प्रीत की रीति कछू ना जानी, पाती एक न बँची रे ।
ओछे की परतीत न करियै, जग में होत हँसी रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, परबस प्रान फँसी रे ॥

**ए री सखी कुबजा के सिखाये स्याम रूठे ।**

मधुबन जाय भये अब राजा, पाये हैं राज अनूठे ।
मात-पिता वसुदेव-देवकी, नन्द-जशोदा के झूठे ॥
आपन निकट रहै भौंरा से, फूलन में रस घूँटे ।
हम कू आस लगी दरसन की, जाय प्रान नहीं छूटे ॥
करि गये कौल करार सखी री, बचन भये सब झूठे ।
'चंदसखी' राधा नहीं बस में, लागे फंद नहीं छूटे ॥

**ऊधौ तेरी हम पै बचै न पाती ।**

यह पाती मेरे श्यामसुन्दर की, बाँचत फटै मेरी छाती ॥
एसे अनौखे कृष्ण रिझाये, है रही जग में हाँसी ।
सोलह सहस गोपिका छोड़ीं, कुबिजा के भये साथी ॥
ये दुःख-सुख की बतियाँ कासे कहूँगी, जरे तेल बिन बाती ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन की हूँ दासी ॥

# श्री राधा

**अपनी डगर चल्यो जा रे बृजवासी ।**
वृन्दावन के लोग बिसवासी, प्रीत लगाय गरे डार गयौ फाँसी ।
अलगहि रहो हाथ जनि लाओ, देखैं लोग करेंगे मोरी हाँसी ॥
तुम तो श्याम सदाँ के कपटी, लाज न आवत तोहि जरा-सी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तू मेरौ ठाकुर मैं तेरी दासी ॥

**बाबा नन्द कौ लाला रसिया रे ।**
थाल भरौ गज मोतियन कौ रे, चौमुख जोड़ दिया रे ।
ठाँड़ी-ठाँड़ी आँगन पंथ निहारूँ, क्यूँ तरसावो हो जिया रे ॥
आवन कहि गये अजहू न आये, निपट कठोर हिया रे ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन में जिया रे ॥

**बसो मेरे नैनन में नंदलाल ।**
साँवरी सूरत, माधुरी मूरत, गल बैजंती माल ।
जब ते बिछुड गये मनमोहन, तब से भई बेहाल ॥
दरस दिखा तन ताप मिटावौ, अरज सुनो गोपाल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तुम दीनन प्रतिपाल ॥

**करमन की गति न्यारी, मैं किस विध लिखूँ मुरारी ।**
ऊजल पाँख दई बगुले कूँ, कोयल कर दी कारी ॥
छोटे-छोटे नैन दिये हथिनी को, सोने की अम्बारी ।
बड़े-बड़े नैन दिये मिरगा कूँ, वन-वन फिरत सिकारी ॥
चतुर नार झूरै पुतरन कूँ, मूरख जन-जन हारी ।
मूरख राजा राज करत हैं, पंडित फिरत भिखारी ॥
वैश्या ओढ़े साल दुशाला, पतिवरता ऊघारी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, तन-मन जाऊँ बलिहारी ॥

## खंडिता

**कहाँ बसिया, मोहन ! रातऽडली ।**
काँई थाँरो नाँव भणीजै, साँवरा काँई थारी जात री ॥
भगत बछल म्हारो नाव भणीजै, जदुकुल म्हारी जातऽडली ॥
काँई सतभामा रे महल पधार्‌या, काँई कुबज्या से बातऽडली ॥
केसरान्यो जामो सलवट भरियो, अटपट दीसै थारी पागऽडली ॥
हाँथा पगाँ रे बाधिया डोरडा, हाथा मँहदी राचऽडली ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, प्राण मिल्या परमातऽडली ॥

**जशोदा रो प्यारो म्हाँने घणों ही सुहावे ।**
जमुना रे तट धेनु चरावै, ऊँचे सुरा सूँ कान्हा बंसी बजावै ।
मैं मेरे घर सूँ सजकर निकसी, कूँजऽडो पकऽड कान्हो वन में बुलावै ॥
आप तो ग्वालिन के ढिंग बैठे, खऽडो होय मोय सैनन समझावै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, मोय लेकै कान्हा हिवऽडे लगावै ॥

**म्हाने प्यारो लागे थारो नट वारो भेस ॥**
बैठ पताल कालिनाग नाथ्यो, फण-फण निरत करेस ।
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावत, मुख पर मुरली धरेस ।
वृन्दावन में रास रच्यौ है, गोपीन संग रमेस ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणों में चित्त धरेस ॥

**मथुरा जावोला तो नंद की दुहाई छै ।**
बालक वैस गवन कियौ मथुरा, सारी या तो माधो की कमाई छै ॥
नान्हा नान्हा कान्हा थे तो ढोटा ब्रजचंद, म्हे तो थाँरे लोयणाँ लुभाई छै ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरणन में सब लाई छै ॥

**मेरे आँगण में बंसी बजाय साँवरा, ख्याल खिलोणे तने ले दूँगी ।**
चंद सरीखा ले दूँगी खिलोणा, मोतीड़ा में दूँगी मढ़ाय ॥
लट्टू भी ले दूँ तने, फिरकी भी ले दूँ, रेशम की डोर दिवाय ।
चालो महल म्हा चौसर रमस्याँ, बाजी ले बाँगा लगाय ॥
थे जीते म्हाँने दासी राखो, म्हें जीताँ थे बिलमाय ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणन चित लाय ॥

**लेता जाजो जी साँवरिया बीड़ी पान की ।**
काथो चूना लोंग सुपाड़ी, बीड़ी बनी नागर पान की ।
तुम नन्दजी के छैल छबीले, मैं बेटी वृषभान की ।
चालौ महल में चौसर खेलाँ, बाजी लगावाँ हरि के नाम की ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, जोड़ी बनी है राधे श्याम की ॥

**माई मैं लियौ है गोविन्द मोल ।**
कोई कहे सूधो, कोई कहे मूधो, लियो है तराजू तोल ॥
लोक बिरज के सबही जाने, लियो बाजते ढोल ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, पायो पूरब के कोल ॥

**मिलता जाजो मुरारी, थाँकी सूरत ऊपर वारी ॥**
जो थें म्हारो नाम नहीं जाणों, म्हारो नाम वृषभानी ।
सूरज सामी पोल हमारी, माणक चोक निसानी ।
वृषभान घर दस दरवाजा, नहीं चोड़े नहीं छानी ।
म्हारे आँगन पेड़ कदम को, ऊपर कनक अटारी ।
थे जावो कान्हा धेनु चरावा, मैं जाऊँ जमुना पानी ।

थाँके म्हारे प्रीत लगी है, सारी दुनियाँ जानी ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरी चरण बलिहारी ।
ऐसी प्रीत निभाजो कान्हा, जैसे दूध में पानी ॥

**मिलता जाज्यो राज गुमानी, थारी सूरत देख लुभानी ।**
म्हारो नाम थे (जाणों) बूझो, मैं छू राम दिवानी ।
आमी सामी पोल नन्द की, चंदन चौक निसानी ।
थे म्हारे घर आवो बंसीवारा, करस्या बहुत लड़ानी ।
कराँ रसोई सोंद की थारी, बहुत कराँ मिजमानी ।
थे आवो हरि धेणु चरावन, म्हें जल जमुना पानी ।
थे नंदजी कौ लाल कहावो, म्हें गोपी मस्तानी ।
जमुनाजी के नीरे तीराँ, थे हरि धेनु चराज्यो ।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, नित बरसाणे आज्यो ॥

**ठगना ठाकुर छै महाराज, म्हाँने नित ठगवाने आवै ।**
जागत डीराँ लागूँ नाँही, सूती आण जगावै ।
ठंडौ भोजन भावत नाँही, तातो आण करावै ।
हमरी सुनै ना कहै आपणी, बंसी में भरमावै ।
'चन्द्रसखी' मोहन से राजी, चरणन में चितलावै ॥

श्री राधा

**कबकी ठाड़ी सेवाकुंज में, जोऊँ तिहारी बाट ।**
नकौ वचन म्हाँसू कर गया, जमुनाजी के घाट ॥
मोर मुकुट थाँरे सोहणो, गल वैजंती माल ।
मुख पर मुरली सोहणी, थाँरा सुन्दर नैण बिसाल ॥
वृन्दावन की कुंजगलिन में, रच्यो है रास विलास ।
एक गोपी न्यारी नाचै, तो जी, एक मोहन के पास ॥
'चन्द्रसखी' तुम्हरो जस गावै, धरै तुम्हारो ध्यान ।
सेवाकुञ्ज में आयके तो म्हाँने दरसन दो भगवान ॥

**रंगीलौ गुमानी कान्ह हियरे बस्यौ ।**
पीताम्बर कटि काछें काछनी, हीरा मोती जर्‌यौ माथे मुकुट कस्यौ ॥
गहि द्रुम डार कदम तरुवर की, मंद मुसकाय, म्हाँरी ओर हँस्यौ ।
'चन्द्रसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, निरख दृगन म्हाँरो जियरो फँस्यौ ॥

**मथुरा मत जा गिरवर धारी ।**
वेणु बजा ब्रजबनिता मोही, अरज करत सखियाँ सारी ।
बिन दरसण तन-मन सब व्याकुल, अरज सुनो महाँरी गिरधारी ।
मथुरा माँहे बसत कूबरी, बस करले जादू डारी ।
तुम तो श्याम सदा के कपटी, छाँड चले सब ब्रजनारी ।
कुबिजा कुटिल कंस की चेरी, वा तो सोत लगे म्हाँरी ।
'चन्द्रसखी' दरसण की प्यासी, चरणकमल पर बलिहारी ॥

# राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी! आप मेरे ऊपर दया करिये। इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है; अतः आप अपने सहज करुणामय स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये।

**राधे किशोरी दया करो।**

**हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो।**
**सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो॥**
**विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो।**
**दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो॥**
**दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो।**
**कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो॥**

(परम पूज्य श्रीरमेशबाबाजी महाराज)

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आयी हैं। मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ। इस जगत् में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है। हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये। मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ। आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए। हे श्यामा जू! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है।